कोटद्वार, शुक्रवार
7 जून 2024
वर्षः 46
अंकः 47 पृष्ठः 4
मूल्यः 2.00
RNI No.UTTHIN/2005/16338

जयन्त

निर्भीक – निष्पक्ष – जनसरोकार

www.dainikjayantnews.com
स्थापित 1979
संस्थापक : स्व. नरेन्द्र उनियाल
डाक पंजीयन पी.ए.ओ.07-2024-26 फोनः 9412081969 email: nagendra.uniyal@gmail.com

एक नजर

परिवार को बंधक बनाकर कारोबारी के घर से लाखों की लूट

विकासनगर। सहसपुर क्षेत्र के खुशहालपुर में हथियारबंद बदमाशों ने एक कारोबारी के परिवार को बंधक बनाकर हजारों की नगदी और लाखों के जेवर लूट लिए। बदमाशों की संख्या चार बताई जा रही है। बदमाशों ने खुद को ऋइम ब्रांच से बताया था। शोर मचाने पर बच्चों को जान से मारने की धमकी देकर चारों बदमाश कारोबारी की स्कूटी लेकर फरार हो गए। फरार होते वक्त सीसीटीवी कैमरे में बदमाशों की फुटेज रिकॉर्ड हो गई है। पुलिस ने बदमाशों की तलाश शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार बुधवार रात करीब दो बजे कारोबारी फुरकान अहमद अपनी पत्नी, दो बच्चों और भतीजा तथा भतीजी के साथ घर के बरामदे में सो रहे थे। इसी दौरान चार हथियार बंद बदमाश छत के रास्ते घर में दाखिल हुए। इसके बाद बदमाश तमंचा दिखाकर दो छोटे बच्चों को छोड़कर परिवार के सभी लोगों को घर के एक कमरे के भीतर ले गए। बदमाशों ने स्वयं को ऋइम ब्रांच से बताकर फुरकान को नशा कारोबारी और बदमाश बता कर धमकाना शुरू कर दिया। कहा कि तुम्हारी रोजाना की 50 हजार की आमदनी होती है। तुम्हारे घर में लाखों के गहने और नगदी होने की सूचना है। बदमाशों ने गद्दे और सोफे के सीट भी फाड़ दी। इसके बाद बदमाशों ने फुरकान की पत्नी को छोड़कर बाकी सभी के हाथ बांध कर बेड पर बिठा दिया। इसके बाद छोटे बच्चों को जान से मारने की धमकी देकर फुरकान की पत्नी को तिजोरी वाले कमरे में चलने के लिए कहा। तिजोरी खोलने के बाद बदमाशों ने उसमें से करीब 80 हजार की नगदी, दो गले के हार, दो लेडीज अंगूठी, दो जोड़ी पाजेब, तीन जोड़ी कान के झुमके,नाक में पहनी लोंग लूट लिए। इसके बाद शोर मचाने पर बच्चों को जान से मारने की धमकी देकर वह कमरे का दरवाजा बंद कर फुरकान अहमद की स्कूटी लेकर फरार हो गए। लूट की सूचना पर एसपी देहात लोकजीत सिंह, सीओ विकासनगर भाष्कर लाल शाह और थाना पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और पीड़ित परिवार से पूछताछ कर घटना की जानकारी ली। पीड़ित कारोबारी ने पुलिस को लूट की तहरीर दी है। थाना पुलिस आरोपियों की तलाश में जुटी हुई है।

लोगों से जबरन पावर ऑफ अटॉर्नी लेकर जमीन कब्जाता था शेख शाहजहां

कोलकाता,पश्चिम बंगाल में निलंबित तृणमूल कांग्रेस नेता शेख शाहजहां के खिलाफ जांच कर रहे प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के हाथ कुछ महत्वपूर्ण दस्तावेज लगे हैं जिनसे पता चलता है कि कैसे वह संदेशखाली के लोगों की जमीनों पर कब्जा कर लेता था। सूत्रों ने बताया कि शाहजहां के लोग जमीन मालिकों से जबरन पावर ऑफ अटॉर्नी पर हस्ताक्षर कराते थे, जो उसे जमीन को किसी तीसरे व्यक्ति के नाम करने का अधिकार देता था। यह जमीन हथियाने का एक और तरीका था जबकि इसके अलावा खेतों में नमकीन पानी बहाकर उसे बंजर बना देने जैसे उपाय भी अपनाये जाते थे।ईडी ने पाया है कि पावर ऑफ अटॉर्नी प्राप्त करने के बाद जमीन किसी तीसरे पक्ष को काफी उंची कीमत पर बेच दी जाती थी जबकि उसके मूल मालिक को मामूली रकम दी जाती थी।सूत्रों ने बताया कि ईडी ने हाल ही में कोलकाता में पीएमएलए अदालत के समक्ष दायर चार्जशीट में भी पावर ऑफ अटॉर्नी के जरिये जमीन हथियाने का जिक्रकिया है।

दिल्ली को हिमाचल प्रदेश से मिलेगा अतिरिक्त पानी, सुप्रीम कोर्ट ने दिए निर्देश

नईदिल्ली,दिल्ली को जल्द जल संकट से राहत मिल सकती है। जल संकट को लेकर दिल्ली सरकार की याचिका पर आज सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई।इस दौरान कोर्ट ने हिमाचल प्रदेश को दिल्ली के लिए अतिरिक्त पानी छोडने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने हरियाणा सरकार से कहा है कि वह दिल्ली में पानी पहुंचने की राह में रोड़ा न बने, बल्कि सहयोग करे।

कोर्ट ने कहा है कि पानी की बर्बादी न हो इसका भी ध्यान रखा जाए। कोर्ट ने कहा, चूंकि हिमाचल प्रदेश को कोई आपत्ति नहीं है, इसलिए हम निर्देश देते हैं कि वह ऊपरी धारा से 127 क्यूसेक पानी छोड़े, जो हथिनीकुंड बैराज तक पहुंचे और फिर वजीराबाद होते हुए दिल्ली पहुंचे।

लोकसभा चुनाव जीते 41 पार्टियों के उम्मीदवार पहुंचे संसद

● सदन में होंगे बीजेपी और कांग्रेस के 339 सदस्य

नईदिल्ली, लोकसभा चुनाव के नतीजे आ चुके हैं. एनडीए एक बार फिर से केंद्र में सरकार बनाने जा रही है. पीएम मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेंगे. इस बार बीजेपी को 240 सीटें और कांग्रेस के 99 उम्मीदवार चुनाव जीते है. दोनों पार्टियों के मिलाकर कुल 339 सदस्य संसद पहुंचे हैं. इस तरह से 18वीं लोकसभा में कुल 41 पार्टियों के उम्मीदवार चुनाव जीतकर संसद पहुंचे हैं. बुधवार को भंग हुई 17वीं लोकसभा में 36 पार्टियों के सांसद लोकसभा पहुंचे थे. बता दें कि लोकसभा में कुल 545 सीटें हैं इनमें से 443 सीटों पर ही चुनाव होता है. बाकी दो सीटों पर राष्ट्रपति द्वारा सदस्यों को मनोनीत किया जाता है.

18वीं लोकसभा में बीजेपी सबसे बड़ी पार्टी है. जिसके पास 240 सदस्य हैं. वहीं कांग्रेस दूसरे नंबर की सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है. जिसके पास 99 सदस्य हैं. इस तरह से दोनों बड़ी पार्टियों के पास कुल 339 सांसद हैं. बता दें कि बीजेपी लगातार तीसरी बार सबसे बड़ी पार्टी के रूप में संसद में प्रतिनिधित्व करेगी. 2014 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी के पास 282 सांसद थे, जबकि 2019 में बीजेपी ने 303 सीटें सीटें जीती थीं. हालांकि इस बार बीजेपी की सीटों पहले के दोनों चुनाव के मुकाबले काफी कम हैं. वहीं 2014 में कांग्रेस के पास 44 सीटें और 2019 में कुल 52 सांसद ही थे. इस बार कांग्रेस ने अच्छा प्रदर्शन किया और 99 सीटों पर जीत हासिल की है. वहीं बीजेपी के नेतृत्व वाले एनडीए के पास 293 सीटों हैं और बीजेपी तीसरी बार सरकार बनाने जा रही है.

एक दिन आगे बढ़ी पीएम मोदी के शपथ ग्रहण समारोह की तारीख, अब 9 जून लेंगे शपथ!

नईदिल्ली, लोकसभा चुनाव 2024 के परिणाम आने के बाद से ही हर कोई इस बात का इंतजार कर रहा है कि आखिर नई सरकार कब बनेगी. किसी दिन नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री पद की शपथ लेंगे. दरअसल ऐसा लगातार तीसरी बार होगा जब नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार पीएम पद की शपथ लेंगे. लोकसभा चुनाव के परिणाम तो 4 जून को घोषित हो गए लेकिन अब तक शपथ ग्रहण समारोह की तारीख को लेकर आधिकारिक जानकारी नही मिल रही है. इस बीच खबर आई है कि नरेंद्र मोदी की 8 जून को शपथ टल गई है. जी हां अब मोदी 8 जून को शपथ नही लेंगे. एनडीए की तीसरी सरकार का गठन और शपथ ग्रहण समारोह अब एक दिन आगे बढ़ गया है. सूत्रों के हवाले से मिल रही जानकारी के मुताबिक नरेंद्र मोदी 9 जून रविवार को प्रधानमंत्री पद की शपथ लेंगे. उनके साथ कुछ केंद्रीय मंत्री भी शपथ ले सकते हैं. इनमें अमित शाह, राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी से लेकर टीडीपी और जेडीयू के कुछ सांसद भी शामिल होंगे.

कैबिनेट मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल ने की सीएम से भेंट

ऋषिकेश। कैबिनेट मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल ने गुरुवार को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से मुलाकात कर राज्य की पांचों लोकसभा सीटों पर भाजपा की जीत दर्ज होने पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश की पांचों लोकसभा सीटों पर भारतीय जनता पार्टी को प्रचंड बहुमत मिला।

जनता ने केंद्र की मोदी सरकार और राज्य की धामी सरकार के विकास कार्यों पर मुहर लगाई है। अग्रवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के लगातार तीन बार प्रधानमंत्री बनने के रिकॉर्ड की बराबरी की है। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी ने जिस प्रकार से उत्तराखंड के विकास को लेकर काम किया है और केंद्रीय योजनाएं देकर अपना प्रेम दिखाया है।

उससे अभिभूत होकर उत्तराखंड की जनता ने पांचों सीटें जिता कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दी है। देश के विकास के लिए बड़े फैसलों का दौर जारी रहेगा, यह मोदी की गारंटी है। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी जो कहते हैं उसे करके दिखाते हैं।

मुख्यमंत्री ने दुर्घटना की आयुक्त गढ़वाल मण्डल को मजिस्टीरियल जांच के दिये निर्देश

● मुख्यमंत्री पहले दिन से ट्रैकर्स की खोज एवं बचाव के लिए संचालित रेस्क्यू अभियान पर निरंतर रखे रहे नजर

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उत्तरकाशी स्थित सिल्ला–कुशकल्याण–सहस्त्रताल ट्रैक रूट पर मौसम खराब होने के कारण ट्रैकिंग दल के साथ घटित दुर्घटना की मजिस्टीरियल जांच के निर्देश दिये हैं। उक्त मजिस्टीरियल जाच करने हेतु आयुक्त, गढ़वाल मण्डल को नामित किया गया है। आयुक्त, गढ़वाल मण्डल को निर्देश दिये गये हैं कि प्रकरण की निष्पक्ष जांच करते हुए अपनी रिपोर्ट यथाशीघ्र शासन को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करायें।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी सिल्ला–कुशकल्याण–सहस्त्रताल ट्रैक पर फंसे पर्यटकों की खोज एवं बचाव के लिए संचालित रेस्क्यू अभियान पर निरंतर नजर रखे रहे। उन्होंने रेस्क्यू अभियान में हर संभव विकल्पों और संसाधनों का प्रयोग करने की भी हिदायत अधिकारियों को दी थी।

ज्ञातव्य है कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देशों पर हादसे की सूचना मिलते ही रातों–रात वायु सेना से लेकर निजी कंपनियों के हेलीकॉप्टर्स जुटाने के साथ ही उच्च हिमालयी क्षेत्रों में रेस्क्यू करने में दक्ष व अनुभवी रेस्क्यूअर्स की अनेक टीमों को तैयार कर अगले दिन तड़के ही कई दिशाओं से जमीनी व हवाई रेस्क्यू अभियान शुरू कर दिया गया और दोपहर होने तक सभी जीवित ट्रैकर्स को सुरक्षित निकाल लिया गया था।

मुख्यमंत्री शुरू से इस अभियान को लेकर निरंतर जिलाधिकारी से अपडेट लेते रहे। मुख्यमंत्री ने इस हादसे में ट्रैकर्स की मौत होने पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए अधिकारियों को इस रेस्क्यू अभियान में हर संभव विकल्पों पर कार्रवाई करने के साथ ही उत्कृष्ट संसाधनों एव विशेषज्ञ रेस्क्यूअर्स को जुटाने के निर्देश देते हुए कहा था कि सहस्त्रताल क्षेत्र में फंसे जीवित पर्यटकों के जीवन के रक्षा के लिए कोई भी कसर न रखी जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस जटिल व अत्यंत चुनौतीपूर्ण अभियान को तेजी से संचालित करने के लिए रेस्क्यू ऑपरेशन में जुटे सभी लोगों, विभागों व संगठनों ने पूरा प्रयास किया। फलस्वरूप इस हादसे में जीवित सभी व्यक्तियों को गत दिन ही सुरक्षित निकालने में सफलता मिली है।

मेक्सिको में बर्ड फ्लू से दुनियां की पहली इंसानी मौत

\नई दिल्ली। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने बर्ड फ्लू के मामलों में चिंताजनक वृद्धि के बाद इससे होने वाली पहली मानव मृत्यु की पुष्टि की है। पीड़ित मेक्सिको का निवासी था, जो एवियन इन्फ्लूएंजा ए के लक्षणों से पीड़ित था और बीमारी के कारण दम तोड़ दिया। मामले से जुड़े विशिष्ट तनाव और विवरण तथा मनुष्यों पर इसके प्रभाव की अभी भी जांच की जा रही है; हालाँकि, इस घटना ने अब वैश्विक स्वास्थ्य संगठन को सतर्क कर दिया है।

मेक्सिको में हुई बर्ड फ्लू से विश्व की पहली मौत

मैक्सिकन स्वास्थ्य अधिकारियों के एक बयान के अनुसार, एक 59 वर्षीय व्यक्ति की कथित तौर पर 24 अप्रैल को "बुखार, सांस लेने में तकलीफ, दस्त, मतली और सामान्य बेचैनी" जैसे लक्षण दिखने के बाद मृत्यु हो गई, जिसकी बाद में डब्ल्यूएचओ द्वारा पुष्टि की गई।

डब्ल्यूएचओ के अनुसार, यह विश्व स्तर पर रिपोर्ट किया गया इन्फ्लूएंजा वायरस से संक्रमण का पहला प्रयोगशाला–पुष्टि मानव मामला है और मैक्सिको में किसी व्यक्ति में एवियन एच5 वायरस संक्रमण का पहला मामला है।

वैश्विक स्वास्थ्य संगठन ने कहा कि उन्हें इस मामले के बारे में पहली बार 23 मई को जानकारी मिली थी जिसमें ये बताया गया था कि बर्ड फ्लू के कारण मैक्सिको में एक व्यक्ति की मौत हो गई है। पीड़ित व्यक्ति का कथित तौर पर पोल्ट्री या अन्य जानवरों के साथ कोई पूर्व संपर्क नहीं था। पीड़ित व्यक्ति का पोल्ट्री या अन्य जानवरों के संपर्क में आने का कोई इतिहास भी नहीं था। हालांकि, यह भी है कि उन्हें पहले से ही कई ऐसी बीमारियाँ थीं, जिसके कारण उनकी स्थिति और बिगड़ी।

तीन समाह से बीमार था व्यक्ति

अधिकारियों के अनुसार, 59 वर्षीय व्यक्ति एवियन फ्लू के गंभीर लक्षणों का अनुभव करने से पहले तीन सप्ताह तक बिस्तर पर पड़ा रहा। विशेषज्ञों ने पहले भी बर्ड फ्लू के बढ़ते मामलों के बारे में चिंता जताई है, जिसमें कहा गया है कि यह कोरोनावायरस से 100 गुना अधिक शक्तिशाली हो सकता है।

यह बताना महत्वपूर्ण है कि पहली रिपोर्ट की गई मौत के लिए जिम्मेदार स्ट्रेन वर्तमान में अमेरिका में पशुधन में प्रसारित होने वाले बर्ड फ्लू स्ट्रेन से अलग है। संयुक्त राज्य अमेरिका में, मार्च में डेयरी झुंडों में ल5ठ1 स्ट्रेन का पता चला था, जिसकी पुष्टि तीन डेयरी कर्मचारियों में हुई थी। रिपोर्ट मेक्सिको भर में पोल्ट्री में एवियन इन्फ्लूएंजा उपप्रकार ए के मामलों का संकेत देती हैं।

वट अमावस्या पर श्रद्धालुओं ने लगाई गंगा में आस्था की डुबकी

ऋषिकेश। ज्येष्ठ अमावस्या पर गुरुवार को गंगा में आस्था की डुबकी लगाई। सुबह से ही श्रद्धालुओं की त्रिवेणीघाट समेत विभिन्न घाटों पर भीड़भाड़ दिखी।

यात्रियों महिलाओं ने व्रत रखकर दान पुण्य भी किया। गुरुवार को राजस्थान, पंजाब, हरियाणा और दिल्ली के यात्री गंगा स्नान के लिए पहुंचे। ज्येष्ठ का महीना गंगा मैया को समर्पण का महीना है। स्नार्थियों ने गंगा स्नान कर दान पुण्य भी किया। महिलाओं ने व्रत रखकर वट वृक्षों की परिक्रमा की। जो महिलाएं वट वृक्षों तक नही गईं, उन्होंने वट की टहनी कलश में लगाकर घरों पर ही पूजा की। महिलाओं ने कथा सुनने के बाद अनेक प्रकार के खाद्य पदार्थों, फलों और मिष्ठान्न का संकल्प कर दान किया।

दिल्ली के तिहाड़ जेल में फिर चले चाकू, टिल्लू और गोगी गिरोह के बीच मारपीट

नईदिल्ली,दिल्ली के तिहाड़ जेल में एक बार फिर कैदियों के बीच मारपीट की खबर सामने आई है। इस दौरान नुकीले सुआ और चाकू से हमले किए गए। घटना बुधवार दोपहर को घटी है।

रिपोर्ट के मुताबिक, दिल्ली पुलिस के अधिकारी ने बताया कि मारपीट टिल्लू गिरोह के 2 कैदी गौरव और गुरिंदर ने शुरू की थी। उन्होंने गोगी गिरोह के सदस्य हितेश पर हमला कर दिया।दोनों ने हितेश को चाकू और सुआ से बुरी तरह घायल कर दिया।

पुलिस अधिकारी ने बताया कि हितेश को डीडीयू अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मारपीट के मामले में कैदियों की पहचान की जा रही है।मारपीट किस बात पर शुरू हुई, इसकी जानकारी सामने नहीं आई है। पुलिस सीसीटीवी कैमरे से जांच कर रही है और अन्य कैदियों से पूछताछ जारी है।पुलिस ने बताया कि मामले को लेकर हरिनगर थाने में हत्या के प्रयास का मामला दर्ज किया गया है।

चंद्रबाबू नायडू 12 जून को लेंगे मुख्यमंत्री पद की शपथ

नईदिल्ली,आंध्र प्रदेश के विधानसभा चुनाव में तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) सबसे बड़ी पार्टी उभरी है। उसने जगन रेड्डी की वाईएसआर कांग्रेस पार्टी को बुरी तरह मात दी है।रिपोर्ट के मुताबिक, चुनाव नतीजों के बाद टीडीपी प्रमुख चंद्रबाबू नायडू राज्य की सत्ता संभालने की तैयारी कर रहे हैं। वह संभवतः 12 जून को मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे।नायडू राज्य में चौथी बार मुख्यमंत्री के रूप में कामकाज संभालेंगे। पहले वह 9 जून को शपथ लेने वाले थे।नायडू पहले 9 जून के अपने शपथ ग्रहण समारोह में नरेंद्र मोदी को भी प्रधानमंत्री के तौर पर आमंत्रित करने वाले थे, लेकिन तब तक केंद्र में सरकार बनने को लेकर असमंजस की स्थिति थी।बुधवार को स्थिति साफ होने के बाद नायडू के शपथ ग्रहण समारोह की तारीख बदल दी गई।बता दें कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) 7 जून को सरकार बनाने का दावा पेश करेगी।8 जून को मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेंगे।आंध्र में चुनाव से पहले भाजपा ने नायडू की टीडीपी और फिल्म अभिनेता पवन कल्याण की जन सेना पार्टी के साथ गठबंधन किया था।चुनाव परिणाम आने के बाद टीडीपी को राज्य की 175 में 135 सीट, जन सेना को 21 और भाजपा को 8 सीटें मिली हैं। वाईएसआर कांग्रेस को 11 सीटों पर संतोष करना पड़ा है।नायडू 1995–2004 तक राज्य के मुख्यमंत्री रह चुके हैं। 2014 में तेलंगाना बनने के बाद नायडू आंध्र के पहले मुख्यमंत्री बने थे।

सावधान! बदलेगा उत्तराखंड का मौसम, पहाड़ों में ओलावृष्टि, मैदान में अंधड़ का अलर्ट

देहरादून। उत्तराखंड के मैदानी क्षेत्रों में चटख धूप परीक्षा ले रही है। हालांकि, पर्वतीय क्षेत्रों में आंशिक बादल छाने के साथ ही कई स्थानों पर बौछार पड़ी। दून समेत आसपास के क्षेत्रों में पारा 40 डिग्री सेल्सियस के करीब रहा, जिससे भीषण गर्मी महसूस की गई।

मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार, आज पहाड़ों में आंशिक बादल छाये रह सकते हैं। कहीं–कहीं गरज–चमक के साथ ओलावृष्टि हो सकती हैं। मैदानी क्षेत्रों में अंधड़ चलने के आसार हैं। देहरादून के आसपास के क्षेत्रों में गर्जन के साथ बौछारें पड़ने की आशंका है। दून में सुबह से ही चटख धूप खिली रही और पारा तेजी से चढ़ने लगा। हालांकि, हवा चलने से दोपहर तक गर्मी से फौरी राहत रही, लेकिन धीरे–धीरे तापमान 40 डिग्री सेल्सियस के करीब पहुंचा और तपिश बढ़ गई। दोपहर बाद कहीं–कहीं आंशिक बादल भी मंडराने लगे।

पर्वतीय क्षेत्रों में कहीं–कहीं वर्षा

हालांकि, कहीं भी वर्षा नहीं हुई और उमसभरी गर्मी ने बेहाल किया। उधर, पर्वतीय क्षेत्रों में कहीं–कहीं वर्षा दर्ज की गई। मौसम विभाग ने आज दून में आसमान मुख्यतः साफ रहने से लेकर आंशिक बादल छाये रहने की आशंका जताई है। इस दौरान सतही हवाएं चल सकती हैं और कहीं–कहीं 70 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से अंधड़ चलने की चेतावनी दी गई है।

जबकि ऊंचाई वाले क्षेत्रों में वर्षा और ओलावृष्टि होने के आसार जाताए जा रहे हैं।

रांची में रेप के बाद महिला की हत्या

रांची, रांची के पिठौरिया थाना क्षेत्र में 45 साल की एक महिला की लाश गुरुवार को ओखरगड़ा जंगल से बरामद की गई। महिला के पुत्र ने दुष्कर्म के बाद उनकी हत्या की आशंका जताई है।

महिला बुधवार से लापता थी। उसके घर वाले तलाश में जुटे थे, लेकिन कुछ पता नहीं चल पा रहा था। गुरुवार को कुछ लोगों ने जंगल में लाश देखी। इसके बाद सूचना पाकर पुलिस पहुंची।

शव की शिनाख्त एक दिन पहले से लापता महिला के रूप में की गई है। पुलिस ने उनके पुत्र के बयान के आधार पर एफआईआर दर्ज की है।

एक अन्य घटना में, झारखंड के पलामू जिले के रामगढ़ की 13 साल की आदिवासी बालिका से बिहार के सासाराम में रेप के बाद उसकी हत्या कर दी गई। उसे ट्रैफिकिंग कर बिहार ले जाया गया था। उसके परिजनों ने पलामू पुलिस के पास इसकी शिकायत दर्ज की। इसके बाद बिहार पुलिस को इसकी सूचना दी गई।

अमित शाह, जेपी नड्डा और राजनाथ सिंह की बैठक, सरकार गठन को लेकर चर्चा

नई दिल्ली,। केंद्र में सरकार गठन की रूपरेखा और तैयारियों को लेकर भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह पार्टी नेताओं के साथ एक अहम और महत्वपूर्ण बैठक कर रहे हैं।

पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के आवास पर चल रही बैठक में अमित शाह और राजनाथ सिंह के अलावा भाजपा के राष्ट्रीय संगठन महासचिव बीएल संतोष एवं राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े सहित कई अन्य नेता मौजूद हैं।

माना जा रहा है कि जेपी नड्डा के आवास पर चल रही बैठक में एनडीए सरकार के शपथ ग्रहण समारोह की तैयारियों के साथ–साथ मोदी मंत्रिमंडल की रूपरेखा पर भी चर्चा हो सकती है।

मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल में एनडीए के सहयोगियों की भूमिका काफी अहम हो गई है। इसलिए भाजपा को मंत्रिमंडल में मंत्रियों की संख्या और विभागों के आवंटन को लेकर ऐसा फॉर्मूला बनाना पड़ेगा, जिससे सभी दल संतुष्ट हो सके। आपको बता दें कि शुक्रवार 7 जून को भाजपा संसदीय दल की बैठक होनी है, जिसमें भाजपा के सभी सांसद मिलकर नरेंद्र मोदी को पार्टी के संसदीय दल का नेता चुनेंगे।

भाजपा शासित राज्यों के सभी मुख्यमंत्री एवं उपमुख्यमंत्री, विभिन्न राज्यों से जुड़े भाजपा के वे नेता जो विधानसभा में नेता विपक्ष के तौर पर काम कर रहे हैं सहित पार्टी के कई अन्य नेता भी बैठक में मौजूद रह सकते हैं।

शुक्रवार को ही एनडीए गठबंधन के सभी सांसदों की भी बैठक हो सकती है जिसमें नरेंद्र मोदी को एनडीए संसदीय दल का नेता चुना जाएगा। इसके बाद एनडीए नेता राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मिलकर सरकार बनाने का दावा पेश करेंगे।

नई मोदी कैबिनेट में इन मंत्रालयों पर चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार की नजरें

नईदिल्ली,। लोकसभा चुनाव परिणाम के बाद अब सरकार बनाने की तैयारी शुरू हो गई है।राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) में बड़ी पार्टियां बनकर उभरी जनता दल यूनाइटेड (जदयू) और तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) अब अहम मंत्रालयों और खास मांगों को लेकर मोलभाव में जुटी हैं।खबर है कि नीतीश कुमार की जदयू अपने लिए कम से कम 3 मंत्रालय मांग सकती है। नायडू भी आंध्र प्रदेश के लिए विशेष राज्य के दर्जे मांग कर सकते हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, जदयू की नजर रेलवे, ग्रामीण विकास और जल शक्ति मंत्रालय पर है। इसके अलावा परिवहन और कृषि मंत्रालय भी पार्टी की सूची में हैं।एक नेता ने कहा, नीतीश ने एनडीए सरकार में रेलवे, कृषि और परिवहन

विभाग संभाले हैं। हम चाहते हैं कि हमारे सांसद ऐसे विभाग लें, जो राज्य के विकास में मदद कर सकें। घटते जल स्तर और बाढ़ की चुनौतियों के संदर्भ में जल शक्ति महत्वपूर्ण है। रिपोर्ट के मुताबिक, जदयू एक उच्च जाति, एक अन्य पिछड़ा वर्ग कुशवाह और एक अति पिछड़ा वर्ग नेता को मंत्री बना सकती है। जदयू के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष और मुंगेर के सांसद ललन सिंह, झंझारपुर के सांसद रामप्रीत मंडल और वाल्मिकी नगर के सांसद सुनील कुमार दौड़ में हैं।इनके अलावा सीतामढी के सांसद देवेश चंद्र ठाकुर और राज्यसभा सांसद संजय कुमार झा को भी मंत्री बनाया जा सकता है। टीडीपी की सबसे बड़ी मांग आंध्र प्रदेश के लिए विशेष राज्य का दर्जा हो सकती है। आंध्र प्रदेश से तेलंगाना को अलग करने के बाद से ही ये मांग जोर पकड़ रही है।नायडू और पूर्व मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी दोनों ने कई विशेष दर्जे की मांग की है। दोनों नेताओं का तर्क है कि आंध्र प्रदेश को अन्यायपूर्ण और असमान तरीके से विभाजित किया गया, जिस वजह से उसके हिस्से में राजस्व के स्त्रोत कम और ऋण ज्यादा आया।

अगला बिहार विधानसभा चुनाव लड़ेंगे प्रशांत किशोर

पटना,। जन सुराज पदयात्रा के सूत्रधार और देश के चर्चित चुनावी रणनीतिकार ने गुरुवार को कहा कि अगला विधानसभा चुनाव वे मजबूती से लड़ेंगे।उन्होंने कहा कि जब चुनाव लड़ेंगे तो राजद के अध्यक्ष लालू यादव और जदयू अध्यक्ष नीतीश कुमार जैसे नेताओं के दांत खट्टे हो जाएंगे। उन्होंने साफ लहजे में कहा कि वे मुझे धकिया (धकेल) दें, उनके बस की बात नहीं।

बिहार में पदयात्रा कर रहे किशोर ने कहा कि वे अगर जन सुराज व्यवस्था नहीं बनाएंगे तो कल होकर समाज के लोग बोलेंगे कि प्रशांत किशोर गांवों–प्रखंडों में घूम रहे हैं, इनकी तो कोई ताकत ही नहीं है। मुझे नीतीश कुमार और लालू यादव धकिया नहीं सकते हैं। उन्होंने कहा, मैं अगर बिहार में लडने आया हूं तो इतनी ताकत के साथ लडूंगा कि इन सब नेताओं के दांत खट्टे कर दूंगा। पश्चिम बंगाल में आपने मेरा काम देखा होगा कि मैंने ही उनकी नस ढीली की थी।

कंगना रणौत ने वीडियो जारी कर बयां किया दर्द

नईदिल्ली,। लोकसभा चुनाव जीतने के बाद कंगना रणौत एक बार फिर से सुर्खियों में आ गई हैं। हाल ही में अभिनेत्री ने एक सीआईएसएफ की महिला सिपाही पर थप्पड़ मारने का आरोप लगाया है। इन आरोपों के बाद अभिनेत्री ने सोशल मीडिया पर वीडियो जारी कर अपने साथ हुई घटना की पूरी जानकारी साझा की है।

साथ ही, अभिनेत्री ने यह भी बताया है कि वह पूरी तरह से सुरक्षित हैं। एक्स पर वीडियो जारी करते हुए अभिनेत्री ने कहा, "मैं सभी को बताना चाहती हूं की मैं पूरी तरह से सुरक्षित हूं। इस घटना के बाद से ही मेरे पास तमाम शुभचिंतकों के फोन आ रहे हैं।" उन्होंने आगे कहा, "आज चंडीगढ़ में जो हादसा हुआ वो सुरक्षा जांच के बाद हुआ। जांच के बाद जैसे ही मैं वहां से निकली, वैसे ही दूसरी केबिन से एक महिला सिपाही ने आकर मेरे चेहरे पर हमला किया और गालियां देने लगीं।"

संपादकीय

उत्तराखंड की हिस्सेदारी पर संशय

यह तो स्पष्ट हो चुका है कि इस बार की लोकसभा एनडीए घटक दलों के समर्थन के बिना वजूद में आनी संभव नहीं है। टीडीपी एवं जेडीयू सरकार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे और मंत्रिमंडल में शामिल होने के लिए दोनों ही दलों द्वारा अपनी सूची भी पेश कर दी गई है। भारतीय जनता पार्टी अपने अकेले दम पर इस बार पूर्ण बहुमत की स्थिति में नहीं आई है तो मंत्री पद का बंटवारा करना इस बार प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेंद्र मोदी के लिए एक विवशता होगी। मौजूदा राजनीतिक हालातों में दूसरे भाजपा शासित छोटे राज्यों के साथ ही उत्तराखंड को भी मंत्रिमंडल में हिस्सेदारी से वंचित रहना पड़ सकता है। इस बार वैसे तो एनडीए गठबंधन को बहुमत प्राप्त हुआ है लेकिन एनडीए की सबसे बड़ी पार्टी भारतीय जनता पार्टी इस बार अपने अकेले के बूते पर बहुमत (272) के आंकड़े से कहीं पीछे रह गई। चुनावों से पूर्व हवा बनाने की कोशिश की गई थी कि एनडीए 400 पर से अधिक सीटें हासिल करेगी लेकिन एनडीए 297 सीटों के आंकड़े पर सिमटती हुई नजर आई है तो वहीं इंडिया गठबंधन ने इस बार चुनावों की पूरी तस्वीर ही बदल डाली है। उत्तराखंड में एक बार फिर पांचो सीटों पर भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में जीत का परचम लहराया है। पिछले दो चुनावों से भाजपा उत्तराखंड की पांचो सीटों पर एक तरफ जीत हासिल करती आई है और इस बार भी जीत का यह क्रम दोहराया गया है। इसके बावजूद उत्तराखंड का इस बार मोदी मंत्रिमंडल में हिस्सेदार बनना थोड़ा मुश्किल ही नजर आ रहा है। इसका कारण गठबंधन में शामिल दलों को मंत्रिमंडल में शामिल करना है। अब तक की भाजपा की पूर्ण बहुमत वाली सरकारों में उत्तराखंड को एक प्रभावपूर्ण स्थान केंद्र में दिया गया है लेकिन इस बार उत्तराखंड से किसी सांसद को कैबिनेट या फिर राज्य मंत्री के तौर पर स्थान मिल पाएगा इस पर थोड़ा संदेह है। पूर्ण बहुमत में न होने के कारण भारतीय जनता पार्टी अपने स्तर पर मंत्रिमंडल बनाने की स्थिति में नही होगी तो वैसे भी नीतीश कुमार एवं चंद्रबाबू नायडू के अलावा गठबंधन में शामिल अन्य दलों के नेताओं को भी कैबिनेट या फिर राज्य मंत्री के तौर पर शामिल करना पड़ सकता है। इन परिस्थितियों में भाजपा को अपने ही सांसदों को बैक फुट पर रखना होगा। घटक दलों में महत्वाकांक्षी नेताओं की भरमार है, जिन्हें पूरा करना एनडीए की नई सरकार के प्रधानमंत्री के लिए भी एक बड़ी चुनौती होगी। नीतीश कुमार एवं चंद्रबाबू नायडू द्वारा अपनी पसंद के मंत्रालय की जानकारी बीजेपी को उपलब्ध करा दी गई है लेकिन सिर्फ देखना यह है की अंतिम सहमति मंत्रालय को लेकर किस स्तर पर जाकर रुकती है। हालांकि दोनों ही नेताओं ने दावा किया है कि वह पूरी तरह से एनडीए सरकार के साथ है लेकिन भूलना नही चाहिए कि नीतीश कुमार हो या फिर चंद्रबाबू नायडू या दोनों ही नेता, पूर्व में भाजपा के घुर विरोधी भी रहे हैं और यदि उनके द्वारा असंतोष के और देखने को मिलते हैं तो इस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए। इतना जरूर है कि इस सरकार में नरेंद्र मोदी उस मजबूती के साथ प्रधानमंत्री का पद नहीं चला पाएंगे जैसा कि वे अपने दूसरे कार्यकाल के दौरान चला रहे थे। सभी बड़े फैसलों पर उन्हें न केवल अपने गठबंधन दलों बल्कि एक मजबूत विपक्ष का भी सामना करना पड़ेगा।

रईसी की मौत : मध्यपूर्व में देर तक गूंजेगी हादसे की ध्वनि

—डॉ. एन.के. सोमानी

ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी की हेलिकॉप्टर दुर्घटना में हुई मृत्यु के बाद पूरी दुनिया कशमकश की स्थिति में है। दुनिया के किसी कौने में कोई हलचल नहीं। कोई प्रतिक्रिया नहीं। मध्य-पूर्व सल्बंध है! यूरोशिया में सन्नाटा है और अमेरिका के भीतर आश्चर्यजनक चुप्पी है। लगता है तमाम छोटे-बड़े राष्ट्रों ने खुद को सभ्यता के एक ऐसे खोल में छुपा लिया है, जहां गैर जरूरी शब्दों की गूंज सुनाई न दे सके। क्या कारण है इब्राहिम रईसी जैसे अतिरूढ़िवादी मौलवी और हार्डलाइन कसाईल्ह की मौत पर अच्छी या बुरी कोई प्रतिक्रिया नहीं। हालांकि, अभी तक जो कुछ निकलकर आया है, उसके मुताबिक खराब मौसम की वजह से हेलिकॉप्टर हादसे का शिकार हुआ है। लेकिन जिस तरह से ईरान ने इजरायल और अमेरिका के प्रति सख्त रूख अपनाया हुआ था उसे देखते हुए हादसे में किसी साजिश की आशंका जताई जा रही है।

कहा जा रहा है कि ईसी अजरबैजान के राष्ट्रपति इल्हाम अलियेव के साथ ईरान-अजरबैजान सीमा पर नव निर्मित किज कलासी बांध का उद्घाटन कर वापस लौट रहे थे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक नार्थ वेस्ट ईरान जहां रईसी का हेलिकॉप्टर क्रैश हुआ वहां मौसम बहुत खराब था। ऐसे में हेलिकॉप्टर हादसे का शिकार हो गया हो इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है। लेकिन सवाल यह है कि ईसी के काफिले में शामिल दो अन्य हेलिकॉप्टर सही सलामत अपने गंतव्य तक कैसे पहुंच गए। दूसरा, जिस तरह से पिछले चार सालों में एक के बाद एक ईरान के कई बड़े नेताओं की हत्याएं हुई है उससे भी षंडयत्र का इंकार नहीं किया जा सकता है। जनवरी 2020 में ईरानी कुर्द सेना के जनरल कासिम सुलेमानी की अमेरिका ने बगदाद इंटरनेशन एयरपोर्ट पर ड्रोन से हमला कर हत्या कर दी थी। सुलेमानी की मौत के कुछ समय बाद ईरान के मुख्य परमाणु वैज्ञानिक मोहसिन फखरीजादेह की भी हत्या कर दी गई। फखरीजादेह की हत्या के लिए ईरान आज भी इजरायल की खुफिया एजेंसी मोसाद को दोषी मानता है। इससे पहले 2010-12 के बीच में ईरान के चार परमाणु वैज्ञानिकों की रहस्यमय ढंग से मौत हो गई थी।

इन तमाम घटनाओं के आलोक में यह कहा जा सकता है कि रईसी की मौत को महज दुर्घटना मानकर ईरान स्वीकार कर लेगा इसकी संभावना कम ही है। सवाल यह है कि एक के बाद एक हुई घटनाओं के बावजूद ईरान ने अब तक सबक क्यों नहीं लिया। हर समय शत्रु देशों की खुफिया एजेंसियों की नजर में रहने वाला ईरान वीवीआईपी मूवमेंट के दौरान रखी जाने वाली जरूरी सावधानी या गोपनियता क्यों नहीं रख पाया। रईसी की मौत कहीं ईरानी खुफिया एजेंसियों की लीक का परिणाम तो नहीं। क्या ईरान इस बात को नहीं जानता कि इजरायल लंबे समय से अजरबैजान के जरिए ही उसकी नाभिकीय गतिविधियों पर नजर रखे हुए था।रईसी साल 2021 में उस वक्त ईरान की सत्ता में आए जिस वक्त ईरान आंतरिक असहमति और पश्चिमी ताकतों के साथ दो-दो हाथ कर रहा था। अमेरिका द्वारा ऐतिहासिक परमाणु समझौते से हटने और कोविड-19 प्रकोप के कारण देश गंभीर आर्थिक चुनौतियों से घिरा हुआ था। लचर अर्थव्यवस्था और मुद्रा संकट के चलते व्यापार उद्योग बुरी तरह प्रभावित हो रहा था। कैंसर व डायबिटीज की दवाओं की भारी किल्लत थी। ईरान के केन्द्रीय बैंक पर वैश्विक प्रतिबंध के कारण दवा कंपनियां ईरान से व्यापार करते हुए कतरा रही थी। दूसरी ओर अमेरिका ने रईसी पर व्यक्तिगत तौर पर भी प्रतिबंध लगा रखे थे। उन पर साल 1988 में मानवाधिकारों के उल्लंघन और राजनीतिक कैदियों को मौत की सजा देने के आरोप थे। इन सबके बावजूद रईसी के नेतृत्व में ईरान न्यूक्लियर हथियार बनाने के लिए जरूरी यूरेनियम का संवर्धन करने में कामयाब हो गया। हालांकि, रईसी ने कई बार इस बात को दोहराया कि वे अमेरिका के साथ परमाणु समझौते में फिर से शामिल होना चाहते है। लेकिन एक कठोर सच यह भी है कि उनका प्रशासन अंतरराष्ट्रीय निरीक्षण से हमेशा बचता रहा। यही वजह है कि रईसी का कार्यकाल बड़े पैमाने पर विद्रोह और पश्चिम के प्रति आक्रामक रूख के लिए जाना जाता है।साजिश का एक एंगल ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला खामेनेई के बेटे की तरफ भी जाता हुआ दिखाई दे रहा है। रईसी को खामेनेई का बेहद करीबी माना जाता था। यहां तक की रईसी को खामेनेई के उत्तराधिकारी के तौर पर भी देखा जाता था। 1989 में सुप्रीम लीडर बनने से पहले खामेनेई भी ईरान के राष्ट्रपति का पद संभाल चुके हैं। पिछले दिनों ही खामेनेई ने रईसी को अत्यधिक अनुभव वाला भरोसेमंद व्यक्ति कहा था। इसके बाद अटकले लगाई जा रही थी कि खामेनेई रईसी को अपने उत्तराधिकारी के रूप में प्रस्तुत करेंगे।

दूसरी ओर खामेनेई के बेटे मोजतबा अपने पिता की विरासत को आगे बढ़ाना चाहते है। रईसी उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती थे। निःसंदेह रईसी की मौत के बाद मोजतबा के मार्ग का एकमात्र कांटा अपने आप साफ हो गया है।

अक्टूबर 2023 में इजरायल-हमास युद्ध शुरू हुआ। युद्ध के परिणामस्वरूप पूरा क्षेत्र हिंसक गतिविधियों का गढ़ बन गया। इराक और सीरिया में ईरान समर्थित मिलिशिया ने अमेरिकी ठीकानों को निशाना बनाया है।

कहा जा रहा है कि ईसी अजरबैजान के राष्ट्रपति इल्हाम अलियेव के साथ ईरान-अजरबैजान सीमा पर नव निर्मित किज कलासी बांध का उद्घाटन कर वापस लौट रहे थे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक नार्थ वेस्ट ईरान जहां रईसी का हेलिकॉप्टर क्रेश हुआ वहां मौसम बहुत खराब था। ऐसे में हेलिकॉप्टर हादसे का शिकार हो गया हो इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है। लेकिन सवाल यह है कि ईसी के काफिले में शामिल दो अन्य हेलिकॉप्टर सही सलामत अपने गंतव्य तक कैसे पहुंच गए। दूसरा, जिस तरह से पिछले चार सालों में एक के बाद एक ईरान के कई बड़े नेताओं की हत्याएं हुई है उससे भी षंडयत्र का इंकार नहीं किया जा सकता है। जनवरी 2020 में ईरानी कुर्द सेना के जनरल कासिम सुलेमानी की अमेरिका ने बगदाद इंटरनेशन एयरपोर्ट पर ड्रोन से हमला कर हत्या कर दी थी। सुलेमानी की मौत के कुछ समय बाद ईरान के मुख्य परमाणु वैज्ञानिक मोहसिन फखरीजादेह की भी हत्या कर दी गई। फखरीजादेह की हत्या के लिए ईरान आज भी इजरायल की खुफिया एजेंसी मोसाद को दोषी मानता है। इससे पहले 2010-12 के बीच में ईरान के चार परमाणु वैज्ञानिकों की रहस्यमय ढंग से मौत हो गई थी। इन तमाम घटनाओं के आलोक में यह कहा जा सकता है कि रईसी की मौत को महज दुर्घटना मानकर ईरान स्वीकार कर लेगा इसकी संभावना कम ही है। सवाल यह है कि एक के बाद एक हुई घटनाओं के बावजूद ईरान ने अब तक सबक क्यों नहीं लिया।

15 से 20 प्रतिशत बच्चों एवं किशोरों में सामान्य से अधिक रक्तचाप की समस्या

हमारे देश में बच्चों और किशोरों में उच्च रक्तचाप की बढ़ती समस्या बेहद चिंताजनक है। एम्स के विशेषज्ञों का कहना है कि 10 से 19 साल की आयु के लगभग 15 से 20 प्रतिशत बच्चों एवं किशोरों में सामान्य से अधिक रक्तचाप की समस्या है। इससे मस्तिष्क आघात, दिल का दौरा, किडनी की बीमारियां और आंखों को नुकसान होने जैसी स्थितियां पैदा हो सकती हैं।रक्तचाप की नियमित जांच और आवश्यक उपचार पर ध्यान देना बहुत जरूरी हो गया है। उल्लेखनीय है कि वयस्कों में भी यह समस्या गंभीर होती जा रही है। मुश्किल यह है कि अपने ब्लड प्रेशर को लेकर लोग अनजान बने रहते हैं। जिन्हें अधिक रक्तचाप का पता चल जाता है, उनमें से भी बहुत लोग उपचार नहीं कराते। ऐसे में उसका असर गहरा होता जाता है। बच्चों और किशोरों के मामले में अधिक सचेत रहने की आवश्यकता है। ध्यान रहे, उच्च रक्तचाप बीमारी नहीं है, वह अनेक बीमारियों का लक्षण है। बच्चे हों या बड़े, उच्च रक्तचाप होने के कारण समान हैं। एक तो यह अनुवांशिक हो सकता है।

बच्चों में मोटापा की समस्या भी बढ़ रही है। अधिक वजन से ब्लड प्रेशर बढ़ सकता है। कम आयु में तंबाकू या अन्य तरह के नशे की लत भी एक वजह हो सकती है। पढ़ाई का दबाव लगातार बढ़ता गया है। साथ ही, कंप्यूटर और मोबाइल का इस्तेमाल भी खूब होने लगा है। खेल-कूद के समय भी बच्चे-किशोर पढ़ाई में लगे होते हैं या फिर कंप्यूटर या मोबाइल पर मनोरंजन कर रहे होते हैं। शहरों में खेल के मैदान घटते जा रहे हैं। आवासीय इलाकों में इस पर कम ही ध्यान दिया जा रहा है। स्कूलों की दशा भी बेहतर नहीं है। गलाकाट प्रतिस्पर्धा और मोबाइल की लत, ऑनलाइन गेम आदि से तनाव बढ़ता जा रहा है। बच्चों और किशोरों में, बड़ों में भी, उच्च रक्तचाप का यह बड़ा कारण है। अभिभावकों की अपनी व्यस्तता और जीवनशैली भी बच्चों और किशोरों को प्रभावित करती है। इस समस्या और स्वास्थ्य से जुड़े अन्य मामलों के समाधान के लिए अभिभावकों और शिक्षकों को अग्रणी भूमिका निभानी होगी। तनाव न हो या उसका सामना कैसे किया जाए, इस बारे में स्कूलों में सिखाया जाना चाहिए। माता-पिता को अपनी संतानों के साथ अधिक समय बिताना चाहिए तथा यह जानने-समझने का प्रयास करना चाहिए कि उनके जीवन में क्या चल रहा है।चिकित्सकीय या मनोवैज्ञानिक परामर्श लेने में कोई हिचक या देरी समस्या को गंभीर बना सकती है। कुछ महानगरीय स्कूलों में बच्चों और अभिभावकों के साथ संवाद की समुचित व्यवस्था है। ऐसे इंतजाम सभी विद्यालयों में किये जाने चाहिए। यदि कम आयु में उच्च रक्तचाप के मसले को संभाल लिया जाए, तो आगे चलकर अनेक गंभीर और घातक स्वास्थ्य समस्याओं से बचा जा सकता है।

स्वच्छ ऊर्जा की स्थापित क्षमता में बीते नौ वर्षों में 138 प्रतिशत की बड़ी बढ़ोतरी हुई

जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों तथा प्रदूषण की समस्या के समाधान के लिए स्वच्छ ऊर्जा का अधिकाधिक उत्पादन आवश्यक है। स्वच्छ ऊर्जा के उत्पादन और उपभोग में वृद्धि से जीवाश्म ईंधनों पर हमारी निर्भरता भी घटेगी, जिसके बड़े आर्थिक लाभ भी हैं। इस संबंध में भारत निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण के आंकड़ों के अनुसार, स्वच्छ ऊर्जा की स्थापित क्षमता में बीते नौ वर्षों में 138 प्रतिशत की बड़ी बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2023 में स्वच्छ ऊर्जा की कुल स्थापित क्षमता 180 गीगावाट के स्तर पर पहुंच गयी। वर्ष 2014 में यह क्षमता 75।5 गीगावाट थी। हमारी कुल स्थापित विद्युत क्षमता में स्वच्छ ऊर्जा का अनुपात 2014-15 के 31 प्रतिशत से बढ़कर 2022-23 में 43 प्रतिशत हो गया। भारत सरकार ने इस अनुपात को 2030 तक तीन गुना बढ़ाने का लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसे प्राप्त करने के लिए हर वर्ष 50 गीगावाट हरित ऊर्जा क्षमता जोड़ी जायेगी। भारत में सौर, पवन और जल विद्युत उत्पादन की बड़ी संभावनाएं हैं, जिन्हें साकार करने के लिए बड़े निवेश की आवश्यकता है। केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण के एक आकलन के अनुसार, स्वच्छ ऊर्जा के सुचारू वितरण के लिए ट्रांसमिशन इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ाने के लिए 2027 तक 4।75 लाख करोड़ रुपये निवेश करने होंगे। इस योजना के तहत 170 ट्रांसमिशन योजनाओं पर काम किया जायेगा। कुछ दिन पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सूर्योदय योजना की घोषणा की है, जिसके अन्तर्गत कम आय वाले परिवारों को सोलर पैनल लगाने के लिए सहायता दी जायेगी। योजना के पहले चरण में एक करोड़ परिवारों को लाभ मिलने की आशा है।

नई रणनीति के साथ आगे बढ़ना होगा

डॉ. जयंतीलाल भंडारी

इन दिनों प्रकाशित हो रहीं विदेश व्यापार संबंधी नई रिपोटरे में कहा जा रहा है कि 4 जून के बाद गठित होने वाली भारत की नई सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए कि भारत की सेवा निर्यात में दिखाई दे रही उंची संभावनाओं को साकार करके बढ़ते विदेश व्यापार घाटे को कम करने की डगर पर आगे बढ़े।

सेवा निर्यात बढ़ाकर आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) सहित नये डिजिटल कौशल से दक्ष देश की नई पीढ़ी के लिए रोजगार के नये मौके भी तेजी से निर्मित करके नई पीढ़ी को नई मुस्कुराहट दे।

गौरतलब है कि कल तक पूरी दुनिया में भारत का सेवा निर्यात तेज रफ्तार से बढ़ रहे चमकीले सेक्टर के रूप में रेखांकित होता रहा है, लेकिन अब भारत के इसी प्रभावी सेवा निर्यात ने पिछले वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान सुस्त रफ्तार दिखाई है। सेवा निर्यात की यह रफ्तार पिछले तीन साल में सबसे कम रही है। हाल में वाणिज्य मंत्रालय की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक पिछले वित्त वर्ष 2023-24 में भारत से माल एवं सेवाओं का कुल निर्यात 776.68 अरब डॉलर रहा जो वित्त वर्ष 2022-23 में 776.40 अरब डॉलर रहा था। ऐसे में गत वित्त वर्ष में सेवा निर्यात 3.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 339.62 अरब डॉलर का रहा जबकि वस्तु निर्यात 3.11 प्रतिशत की गिरावट के साथ 437.06 अरब डॉलर रहा है।निश्चित रूप से बीते कुछ वर्षों में भारत के निर्यात का एक चमकदार पहलू सेवा निर्यात रहा है। भारत ने डिजिटल माध्यम से मुहैया कराई गई सेवाओं के निर्यात में वैश्विक बाजार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाई है। डिजिटल माध्यम से सेवा निर्यात के तहत कंप्यूटर नेटवर्क का इस्तेमाल कर शिक्षा, मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन, गेमिंग, मनोरंजन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आदि के लिए दक्ष ऑपरेटर, कुशल प्रोग्रामर और कोडिंग विशेषज्ञ द्वारा दी जाने वाली सेवाएं शामिल हैं।भारतीय रिजर्व बैंक के मासिक बुलेटिन में प्रकाशित एक शोध आलेख के मुताबिक, पिछले तीस वर्षों में यानी 1993 से 2022 के बीच भारत का सेवा निर्यात 14 फीसद से अधिक की समेकित सालाना वृद्धि दर से बढ़ा। यह 6.8 फीसद की वैश्विक सेवा निर्यात वृद्धि की तुलना में बेहतर है। परिणामस्वरूप समान अवधि में सेवा निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 0.5 फीसद से बढ़कर 4.3 फीसद पर जा पहुंची। इसी आधार पर भारत दुनिया में सातवां सबसे बड़ा सेवा निर्यातक देश बन गया है, जबकि वर्ष 2001 में सेवा निर्यात के मामले में भारत 24वें स्थान पर था। खास बात यह भी है कि दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवा निर्यात के क्षेत्र में भारत दुनिया में दूसरे और सांस्कृतिक तथा मनोरंजक सेवा निर्यात के मामले में छठे स्थान पर है।विश्व व्यापार संगठन की एक नई रिपोर्ट के अनुसार यदि केवल डिजिटल माध्यम से जुड़ी हुई सेवाओं के निर्यात के आधार पर मूल्यांकन करें तो इस क्षेत्र में भारत जर्मनी और चीन को पीछे छोड़ते हुए दुनिया में अमेरिका, ब्रिटेन और आयरलैंड के बाद चौथे क्रम पर आ गया है। निश्चत रूप से भारत सेवाओं के निर्यात में वैश्विक बाजार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा रहा है।इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि बीते कुछ दशकों से भारतीय अर्थव्यवस्था का अहम पहलू सेवा निर्यात रहा है। इसने न केवल व्यापार घाटे को थामे रखने में मदद की है, बल्कि इनसे देश में रोजगार निर्माण में सहारा दिया है। भारत ने वैश्विक सेवा व्यापार में प्रतिस्पर्धी क्षमता भी प्रदर्शित की है, दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित क्षेत्रों में भारत की लगातार पहचान बढ़ी है। लेकिन अब सेवाओं के निर्यात में कमजोर वृद्धि की मुख्य वजह विकसित अर्थव्यवस्थाओं से मांग नरम रहना है।वित्त वर्ष 2024-25 में भी सेवा निर्यात की हालत कमजोर रहने की आशंका है, क्योंकि वैश्विक अर्थव्यवस्था और विशेष तौर पर अमेरिका एवं यूरोप में उच्च ब्याज दरों के कारण मांग में नरमी रहेगी तथा युद्धजनित परिस्थितियों से वैश्विक व्यापार में कमी आएगी। निश्चित रूप से जिस तरह से ईरान-इस्त्रइल के बीच टकराव और दुनिया में भू-राजनीतिक मुश्किलें लगातार बढ़ रही हैं, उससे कच्चे तेल के दाम के साथ-साथ आपूर्ति संकट बढ़ने की चिंताएं मुंहबाएं खड़ी हैं।

विजय सेतुपति की सस्पेंस—थ्रिलर महाराजा का ट्रेलर रिलीज, अभिनेता का दिखेगा खूंखार रूप

साउथ के पॉपुलर एक्टर विजय सेतुपति कई सालों से इंडस्ट्री में छाए हुए हैं. फिल्म महाराजा उनके करियर की 50वीं फिल्म है और इस बार आपको उनके करियर की जबरदस्त फिल्म देखने को मिलेगी. फिल्म महाराजा का ट्रेलर रिलीज हुआ है जिसमें उनका बहुत ही अलग कैरेक्टर देखने को मिलेगा. इस फिल्म में अनुराग कश्यप विलेन के रूप में नजर आएंगे और ट्रेलर में उनकी झलक भी दिखाई गई है.विजय सेतुपति ने फिल्म महाराजा का पोस्टर शेयर करते हुए दिखाया था कि उनका रूप कितना खूंखार हो सकता है. अब ट्रेलर देखकर आप समझ ही जाएंगे कि विजय किसी मिशन पर निकले हैं और उन्हें कितनी परेशानियों का सामने करना पड़ता है. फिल्म महाराजा का ट्रेलर तेलुगू भाषा में रिलीज किया गया है.अपनी 50वीं फिल्म में विजय सेतुपति ने जो पोस्टर शेयर किया था उसमें वो खून से लतपथ नजर आए. इसे देखकर ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि ये फिल्म एक्शन और सस्पेंस से भरपूर होने वाली है. पोस्टर्स सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुए और इसके बाद से ट्रेलर का इंतजार होने लगा.

फिल्म का निर्देशन निथिलन समिनाथन ने किया है और इस फिल्म की कहानी भी उन्होंने ही लिखी है. निथिलन समिनाथन साउथ के पसंदीदा निर्देशक हैं जिन्होंने कई सुपरहिट फिल्में बनाई हैं. पहले देखें फिल्म का ट्रेलर– ट्रेलर में आप देख सकते हैं कि विजय सेतुपति पुलिस से कुछ कहने की कोशिश कर रहे हैं. लेकिन कोई उनकी बात समझ नहीं पा रहा है. ऐसा आधे ट्रेलर में दिखाया गया लेकिन उतनी देर में आप समझ जाएंगे कि कुछ सस्पेंस तो फिल्म में है जो काफी तगड़ा होने वाला है. वहीं ट्रेलर के अंत में अनुराग कश्यप को दिखाया गया जो विलेन के तौर पर नजर आए. फिल्म महाराजा का ट्रेलर तेलुगू भाषा में लेकिन उम्मीद है कि ये हिंदी में भी रिलीज की जा सकती है.

43 की उम्र में युगांडा के इस गेंदबाज ने बनाया वर्ल्ड रिकॉर्ड

नई दिल्ली। टी20 विश्व कप 2024 में युगांडा ने पापुआ न्यू गिनी की टीम को 3 विकेट से मात दी। इस मैच में युगांडा की टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। पहले बैटिंग करते हुए पापुआ न्यू गिनी की टीम 77 रन पर ऑलआउट हुई।युगांडा की टीम की गेंदबाजी कमाल की रही। युगांडा टीम के गेंदबाज फ्रेंको एनसुबुगा इतिहास में सबसे किफायती चार ओवर का स्पेल करने वाले गेंदबाज बन गए हैं। पापुआ न्यू गिनी के खिलाफ मैच में एनसुबुगा ने यह ऐतिहासिक रिकॉर्ड अपने नाम दर्ज कर लिया हैं। एनसुबुगा ने पापुआ के खिलाफ ऐसा रिकॉर्ड बनाया जो आजतक दुनिया में कोई भी गेंदबाज नहीं कर सका।दरअसल, पापुआ न्यू गिनी के खिलाफ खेले गए टी20 विश्व कप 2024 के 9वें मैच में फ्रेंको एनसुबुगा ने इतिहास रच दिया। एनसुबुगा ने पापुआ न्यू गिनी के खिलाफ किफायती गेंदबाजी की।

भारत ने आयरलैंड को रौंदने के साथ ही तोड़ा चिर—प्रतिद्वंद्वी का बड़ा रिकॉर्ड

नई दिल्ली। टी20 विश्व कप 2024 के 8वें मुकाबले में बुधवार को भारतीय टीम ने आयरलैंड टीम को 8 विकेट से रौंद दिया।

इसके साथ ही टीम इंडिया ने टूर्नामेंट का विजयी आगाज किया। न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए इस मैच में जीत के साथ ही भारतीय टीम ने पाकिस्तान का बड़ा रिकॉर्ड भी तोड़ दिया है।

अब इंडिया टी20 विश्व कप में दूसरी सबसे ज्यादा मुकाबले जीतने वाली टीम बन गई है। इस लिस्ट में टॉप पर श्रीलंका है।

भारतीय टीम ने जीते हैं 29 मैच

भारतीय टीम ने टी20 विश्व कप में अब तक 46 मैच खेले हैं और सुपर ओवर समेत 29 में जीत दर्ज की है। दूसरी ओर श्रीलंका ने टी20 विश्व कप में अब तक 52 मैच खेले है और 32 पर कब्जा जमाया है। इस लिस्ट में तीसरे नंबर पर पाकिस्तान टीम है, जिसने विश्व कप में 47 मैच खेले हैं और 28 पर कब्जा जमाया है। फेहरिस्त में चौथे पर ऑस्ट्रेलिया और 5वें पर दक्षिण अफ्रीका है। कंगारू टीम ने विश्व कप में 40 मैच खेले और 25 में विजय प्राप्त की, वहीं प्रोटियाज टीम ने विश्व कप में 41 में से 25 मुकाबले अपने नाम किए हैं।

अनुराग कश्यप की वेब सीरीज बैड कॉप का टीजर जारी, डिज्नी+ हॉटस्टार पर रिलीज होगी सीरीज

अनुराग कश्यप की गैंग्स ऑफ वासेपुर हो या फिर बॉम्बे वेलवेट हर फिल्म की कहानी दिलचस्प होती है. लेकिन अनुराग जब भी कैमरे के सामने आते हैं तो कुछ गजब ही करते हैं. बीते दिन उन्होंने बैड इमेज को लेकर एक पोस्ट शेयर की थी, जिसके बाद फैंस कन्फ्यूज थे.अब अनुराग कश्यप कन्फ्यूजन दूर करते हुए इस बार फिर गजब कहानी के साथ हाजिर हुए हैं और इसका नाम है ह्यबैड कॉपह्न. अनुराग कश्यप ने इस सीरीज का टीजर रिलीज किया है, जिसमें वह खुद कजबे नाम के एक खतरनाक विलेन के किरदार में नजर आ रहे हैं. तो चलिए देखते हैं कि टीजर में क्या है.

टीजर की बात करें तो यह एक क्राइम थ्रिलर सीरीज लग रही है. 47 सेकेण्ड के टीजर में अनुराग कश्यप ने कजबे के किरदार में महफिल लूट ली है. इसमें अनुराग कश्यप एक गुंडे के किरदार में हैं.वह अपने आदमियों के सामने एक शख्स का मजाक बनाने के लिए उसे बच्चों की एबीसीडी वाला गाना सुनाने के लिए मजबूर करता है. वह जब खिडकी से बाहर देखता है तो उस आदमी को के से शुरू होने वाले शब्द बताने के लिए पूछता है, क्योंकि वह अपना नाम कजबे सुनना चाहता है.

इसके बाद बैड कॉप में एंट्री होती है गुलशन देवैया की. वह सीरीज में पुलिस वाले के किरदार में हैं और काजबे का पीछा कर रहे हैं. टीजर से समझ में आता है कि गुलशन देवैया का इसमें डबल रोल हो सकता है.

डिज्नी प्लस हॉटस्टार ने इस वीडियो को शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा है, क से कजबे. क से कमीना. क से कमिंग सून! बैड कॉप डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर रिलीज होगी. अनुराग कश्यप की सीरीज का टीजर जितना दिलचस्प है उतना ही खतरनाक भी है.

मिस्टर एंड मिसेज माही के आगे फीकी पड़ी सावी!

दिव्या खोसला स्टारर फिल्म सावी ने थिएटर्स पर दस्तक दे दी है. सावी 31 मई, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई है और ऐसे में फिल्म का कई दूसरी फिल्मों के साथ क्लैश भी हुआ है. इसके बावजूद सावी बॉक्स ऑफिस पर पहले दिन ठीक-ठीक ओपनिंग करने में कामयाब रही. वहीं अब दूसरे दिन का कलेक्शन भी सामने आ गया है जिसमें फिल्म की कमाई में थोड़ी घटती दिख रही है. सैकनिल्क की मानें तो सावी ने पहले दिन 1.6 करोड़ रुपए के कलेक्शन के साथ बॉक्स ऑफिस पर ओपनिंग ली. वहीं दूसरे दिन दिव्या खोसला की फिल्म के कलेक्शन में थोड़ी कमी आई और इसने 1.50 करोड़ रुपए का कारोबार किया है.

अभी से पक्की हो गई टीम इंडिया की जीत! पाकिस्तान के पूर्व कप्तान ने ही कर दी भविष्यवाणी

नई दिल्ली। टी20 वर्ल्ड कप 2024 का भारतीय टीम ने विजयी आगाज किया। बुधवार को खेले गए मुकाबले में टीम इंडिया ने आयरलैंड को 8 विकेट से मात दी। अब रोहित शर्मा एंड कंपनी 9 जून को पाकिस्तान से टकराएगी। यह मैच न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा। दोनों ही टीमों के फैंस और प्लेयर्स को बेसब्री से इस महामुकाबले का इंतजार है। इस बीच पाकिस्तान क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान राशिद लतीफ ने भारतीय टीम की तारीफ की है।

9 जून को होगी टक्कर

लतीफ ने कहा कि बाबर आजम को ऐसा कप्तान बनने से पहले लंबा रास्ता तय करना है जो दबाव झेल सके। उन्होंने कहा कि रविवार को जब दोनों टीमों की टक्कर होगी तो संतुलित होने के कारण भारतीय टीम जीत की प्रबल दावेदार होगी। पीटीआई से बातचीत में लतीफ ने कहा, "मेरा फोकस भारत के खिलाफ 9 जून को होने वाले मुकाबले पर है। पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम विश्व कप में प्रदर्शन करने के बजाय भारत के खिलाफ मैच के कारण काफी दबाव में होंगे।"

बाबर आजम को प्रेशर सहना सीखना होगा

लतीफ ने कहा, "बाबर आजम को प्रेशर सहना सीखना होगा। उन्हें विराट कोहली और रोहित शर्मा से इसे सीखना चाहिए। उन्हें पता है कि खेल को कैसे आगे ले जाना है। एक बल्लेबाज के रूप में बाबर आजम बेस्ट हैं, लेकिन एक कप्तान और लीडर के रूप में उन्हें बहुत कुछ सीखने की जरूरत है।" लतीफ ने कहा कि टीम इंडिया के पास बेहतर स्पिनर हैं और मौजूदा फॉर्म के आधार पर रोहित शर्मा की सेना रविवार को जीत की प्रबल दावेदार है।

भारत का पलड़ा भारी नजर आता

पाकिस्तान के पूर्व कप्तान ने कहा, "कुलदीप यादव ऐसे गेंदबाज हैं जो अगर पूरे विश्व कप में भारत के लिए फिट रहे तो बल्लेबाजों के लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। वह भारत के प्रमुख गेंदबाज हैं और सफलता की कुंजी भी हैं। मौजूदा फॉर्म को देखा जाए तो 9 जून को भारत का पलड़ा भारी नजर आता है। पाकिस्तान टीम कउउ टूर्नामेंटों में अच्छा प्रदर्शन करती है,

एक नजर

बलूनी की जीत पर भाजपाइयों ने मनाया जश्न

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : गढ़वाल लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याक्षी अनिल बलूनी की जीत पर बीरोंखाल में भाजपा कार्यकर्ताओं ने गुरुवार को रैली निकालकर मिठाई बांटकर जश्न मनाया। मौके पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने देवी मंदिर बीरोंखाल में पूजा-अर्चना भी की। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री पुष्कर धामी जिंदाबाद के नारे लगाएं। इस अवसर पर बीरोंखाल मंडल अध्यक्ष ओमपाल बिष्ट, प्रेम सिंह नेगी, गोपाल सिंह, अनिल डिमरी, मधु देवी, सावित्री देवी, यशवंत बिष्ट, दिलबर सिंह रावत, दलीप सिंह आदि मौजूद रहे।

प्रवेश के लिए 14 जून तक करें पंजीकरण

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल हिमालयन राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वार में स्नातक प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश लेने वाले छात्र-छात्राओं के लिए समर्थ पोर्टल पर पंजीकरण के लिए तिथि बढ़ा दी है। प्राचार्य प्रो. जानकी पंवार ने बताया शासन से प्राप्त निर्देशों के अनुसार समर्थ पोर्टल के माध्यम से स्नातक प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश पंजीकरण की तिथि को 14 जून 2024 तक विस्तारित किया गया है। बताया कि पूर्व में जारी वरीयता सूची की प्रवेश प्रक्रिया महाविद्यालय में गतिमान है। 14 जून के बाद नई वरीयता सूची जारी की जाएगी।

विद्यार्थियों ने लिया पर्यावरण संरक्षण का संकल्प

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : विश्व पर्यावरण दिवस पर भाबर स्थित भगवंत ग्लोबल विश्वविद्यालय में पौध रोपण अभियान चलाया गया। इस दौरान विद्यर्थियों ने पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. पीएस राणा के नेतृत्व में पौधा रोपण अभियान चलाया गया। उन्होंने कहा कि बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग के लिए हमें अधिक से अधिक पौधा रोपण करना चाहिए। पौधरोपण ही पर्यावरण को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अभियान के दौरान अमलतास, गोलमोहर, टिकोना, लाल चंदन अर्जुन, कपूर, काटले ब्रास, पिंकी फ्लावर, सफेद चन्दन, बारह मसाला, आंवला आदि पौधों का रोपण किया गया। विद्यार्थियों ने लगाए गए पौधों के संरक्षण का भी संकल्प लिया। इस मौके पर डा. अनिल सिंह, प्रति कुलाधिपति डा. आशा सिंह, डा. विभांशु विक्रम सिंह, प्रणिता कंडवाल, डिप्टी रेंजर चंद्र मोहन, डा. सर्वानन, सहायक कुलसचिव अरुण खंतवाल, विशाल, विकास पाल, हर्षित शर्मा, रोहित नन्दन, सोनाथ आदि मौजूद रहे।

श्रीनगर में जल्द शुरू होगी कैथ लैब

श्रीनगर गढ़वाल : चिकित्सा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने बेस चिकित्सालय में कैथ लैब और स्टेट ऑफ आर्ट सेन्ट्रल लेबोरेटरी (अत्याधुनिक प्रयोगशाला) का गुरुवार को भौतिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कैबिनेट मंत्री डा. धन सिंह रावत ने कहा कि जल्द दोनों यूनिट को जनता की सेवा के लिए समर्पित की जायेगी। कहा कि कार्डियोलॉजिस्ट और कार्डियोटेक्नीशियन की तैनाती होते ही कैथ-लैब शुरू कर दी जायेगी।

स्कूटर सवार ने कार में टक्कर मारी, फिर नकली पिस्टल दिखाकर डराया

देहरादून। बल्लूपुर चौक के पास ठेके के नजदीक स्कूटर सवार ने कार में टक्कर मार दी। इसके बाद स्कूटर सवार ने कार चालक को नकली पिस्टल दिखाकर डराया। भीड़ ने मौके पर आरोपी को पकड़ लिया। इसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। इंस्पेक्टर कैंट गिरीश चंद्र शर्मा ने बताया कि रमेश गुरुंग निवासी पुलिस कॉलोनी किशनपुर ने तहरीर दी। कहा कि वह बुधवार शाम करीब छह बजे कार से विकासनगर से देहरादून की तरफ आ रहे थे। तभी बल्लूपुर चौक के पास ठेके के नजदीक सामने से स्कूटर सवार ने कार में टक्कर मार दी। रमेश गुरुंग ने स्कूटर सवार को रोका। उसे कार क्षतिग्रस्त होने के चलते नुकसान की भरपाई को कहा। आरोप है कि इस दौरान उसने असली प्रतीत हो रहा पिस्टल निकाला। उससे दिखाते हुए जान से मारने का भय बनाया।

अनाथालयों-आश्रमों में सैकड़ों की टीबी जांच की

देहरादून। वरिष्ठ जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ. मनोज वर्मा के नेतृत्व में गुरुवार को दून के सभी अनाथालयों, निराश्रित बालक-बालिकाओं के आवासीय विद्यालयों, सुधार गृहों एवं महिला आश्रमों में टीबी स्क्रीनिंग के लिए एक्सरे, बलगम के सैंपल लिए गए।

गर्मी ने बढ़ाई एसी की डिमांड, एडवांस हो रही बुकिंग

गर्मी के मौसम में गुलजार हुआ इलेक्ट्रॉनिक बाजार

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : गर्मी के मौसम ने इलेक्ट्रॉनिक बाजार को गुलजार कर दिया है। गर्मी से निजात के लिए अब कूलर की जगह ऐसी की अधिक डिमांड बढ़ रही है। यही नहीं बाजार में एसी की एडवांस बुकिंग तक चल रही है। कई दुकानदार ऐसी की दामों में ऑफर भी दे रहे हैं।

गढ़वाल के प्रवेश द्वार कोटद्वार में गर्मी का प्रकोप थमने का नाम नहीं ले रहा। भीषण गर्मी के बीच उमस ने आमजन को परेशान कर दिया है। लेकिन, गर्मी ने कूलर व एसी बेचने वाले व्यापारियों के चेहरे खिला दिए हैं। व्यापारी संजय ने बताया कि बीते वर्ष पूरे सीजन में 30-35 ऐसी बिके। लेकिन, इस वर्ष अब तक 150 से अधिक एसी की बिक्री हो चुकी है। व्यापारियों ने बताया कि एसी की डिमांड अधिक है।

कोटद्वार बाजार में एक दुकान में बिक्री के लिए रखी एसी

ग्राहकों को डिमांड देने के बाद एक हफ्ते इंतजार करना पड़ रहा है। एसी की कीमतें भी चालीस हजार से शुरू हो रही है। कूलर की बात करें तो बाजार में विभिन्न कंपनियों के साथ ही देसी कूलर भी मौजूद है। कोई ग्राहक लोहे की बाडी वाले कूलर मांग रहा है। तो कोई फाइवर वाला, कूलर की कीमत आठ हजार से प्रारंभ है।

संस्कृत हमारी जीवन शैली का हिस्सा : ऋतु

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खण्डूडी भूषण ने नजीबाबाद रोड स्थित सरस्वती शिशु विद्या मंदिर इंटर कॉलेज जानकी नगर में संस्कृत भारती द्वारा आयोजित आवासीय प्रबोधन वर्ग में बतौर मुख्य अतिथि प्रतिभाग किया।

इस मौके पर विस अध्यक्ष ने संस्कृत भाषा की उपयोगिता पर बल देते हुए कहा कि देश की संस्कृति को बचाये रखने में संस्कृत भाषा का बहुत बड़ा योगदान है। संस्कृत हमारी जीवन शैली का हिस्सा है, जिसे हमें सीखना होगा। आधुनिक युग में अंग्रेजी का प्रचलन जोरों पर है हमें विद्यालयों में अंग्रेजी के साथ-साथ संस्कृत भाषा को भी प्रयोग में लाना होगा। सुबह की प्रार्थना, विद्यालय में संस्कृत में बात करना इत्यादि से हम अपने विद्यालयों में संस्कृत भाषा को बढ़ावा दे सकते हैं। उन्होंने बताया कि संस्कृत को एक विषय ना लेकर अपितु उसके माध्यम से अपने संस्कार सीखने की जरूरत है। इस अवसर पर क्षेत्र संपर्क प्रमुख प्रेमचंद शास्त्री, जिला संघ चालक विष्णु, वर्ग अधिकारी गब्बर सिंह, प्रांत संगठन मंत्री गौरव शास्त्री, प्रांत मंत्री गिरीश, नगर कार्यवाह प्रशांत, प्रधानाचार्य मनोज कुकरेती आदि मौजूद थे।

विस अध्यक्ष ऋतु खण्डूडी भूषण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए।

पौधा रोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : भृगुखाल रेंज भूमि, संरक्षण वन प्रभाग लैंसडौन एवं आर्मी 127 टीए बटालियन कैंप कस्याली (यमकेश्वर ब्लॉक) की ओर से थल नदी स्थित राजकीय पालीटेक्निक कैंपस में पौधारोपण अभियान चलाया गया। इस मौके पर विभिन्न प्रजाति के पौधों का रोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस दौरान पर्यावरण संरक्षण का संदेश देकर लोगों को पर्यावरण की सुरक्षा के लिए प्रोत्साहित किया गया। साथ ही लोगों को ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाने का आह्वान किया। इस मौके पर समाज सेविका श्रीमती इंदु नौटियाल, सेवानिवृत्त रेंजर राजेंद्र प्रसाद पंत, पूर्व ब्लॉक प्रमुख, प्रशांत बडोनी, पॉलीटेक्निक कॉलेज के प्रधानाचार्य जितेंद्र कुकरेती, हयात सिंह, सोहन जुयाल, सुभाष, लोकपाल बिष्ट, सतीश बहुगुा, दमयंती देवी, सुनीता रावत, देवेंद्र सिंह आदि मौजूद थे।

कार्यकर्ता व पदाधिकारियों की मेहनत से खिला कमल

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : पौड़ी गढ़वाल सीट पर अनिल बलूनी की जीत की खुशी में विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खंडूड़ी भूषण ने कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों को सम्मानित किया। कहा कि कार्यकर्ता व पदाधिकारियों की मेहनत से ही कमल का फूल खिला है। झंड़ाचौक में आतिशबाजी व मिष्ठान वितरण के उपरांत मालगोदाम रोड स्थित विस अध्यक्ष के कार्यालय में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। विस अध्यक्ष ने कहा कि जिस लग्न, धैर्य व निष्ठा भावना से कोटद्वार विधानसभा के कार्यकर्त्ताओं ने कार्य किया यह जीत उसी का प्रमाण है। विधानसभा अध्यक्ष ने बताया कि नव निर्वाचित गढ़वाल सांसद अनिल बलूनी को कोटद्वार से 23610 वोटों की बढ़त मिली जिसके स्वरूप हमनें अपनी विधानसभा से सांसद को बढ़त बना कर केंद्र में भेजा। कहा कि एक बार फिर नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र में सरकार बनने जा रही है। उन्होंने कहा कि पार्टी को मजबूत करने के लिए सबसे अधिक मेहनत कार्यकर्ताओं ने की। उन्होंने कार्यकर्त्ताओं से निगम चुनाव के लिए भी मेहनत करने की अपील की। इस मौके पर भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष शैलेंद्र बिष्ट, जिला अध्यक्ष बिरेंद्र रावत, पूर्व विधायक शैलेंद्र रावत, विधानसभा संयोजक राज गौरव नौटियाल, ऋषि कंडवाल, भुवनेश खर्कवाल, विवेक अग्रवाल, विजय लखेड़ा, पंकज भाटिया, सुनीता कोटनाला, अनिता आर्य, हरी सिंह, मनोज पांथरी आदि मौजूद रहे।

कार्यक्रम में कार्यकर्ताओं को संबोधित करती विस अध्यक्ष

शहर में अतिक्रमण के खिलाफ चलवाएं अभियान

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : शहर में चिह्नित अतिक्रमण को हटवाने के साथ ही विभिन्न समस्याओं को लेकर पूर्व सैनिक संघर्ष समिति ने विधानसभा अध्यक्ष को ज्ञापन दिया। कहा कि समस्याओं के निराकरण को गम्भीरता से कार्य किया जाना चाहिए। समिति के अध्यक्ष महिंद्रपाल सिंह रावत के नेतृत्व में पूर्व सैनिकों ने विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खण्डूड़ी भूषण को ज्ञापन दिया। समिति के अध्यक्ष ने बताया कि शहर में अतिक्रमण की समस्या लगातार बढ़ती जा रही है। पूर्व में अतिक्रमण चिह्नित करने के बाद भी उसे हटाने के लिए गम्भीरता नहीं दिखाई गई।

नतीजा, अतिक्रमण के कारण यातायात व्यवस्था बेपटरी होती जा रही है। रेहड़ी-ठेली वालों की भी संख्या लगातार बढ़ रही हैं। ऐसे में इनका सत्यापन होना भी जरूरी है। बताया कि शहर में आवारा गौवंशो व कुत्तों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। आवारा कुत्ते राह चलते लोगों को काट रहे हैं। ऐसे में सबसे अधिक खतरा बच्चों को बना हुआ है। बताया कि गाड़ीघाट में आबादी के बीच संचालित हो रहे ट्रेंचिंग ग्राउंड को अन्यत्र शिफ्ट किया जाना चाहिए। केंद्रीय विद्यालय निर्माण के लिए भी गम्भीरता दिखाई जानी चाहिये। इस मौके पर ताजवर सिंह, राजेश बिष्ट, बलबीर सिंह, ताजबर सिंह गुसाई, सुधाकर बलूनी, गोपाल सिंह, प्रेम सिंह गुसाईं आदि मौजूद रहे।

कोटद्वार में विधानसभा अध्यक्ष को ज्ञापन देते पूर्व सैनिक

शिक्षक संघ ने शिक्षा मंत्री का जताया आभार

श्रीनगर गढ़वाल : राजकीय शिक्षक संघ टिहरी गढ़वाल ने माध्यमिक विद्यालयों में प्रभारी प्रधानाचार्य का कार्य देख रहे वरिष्ठ प्रवक्ताओं और एलटी शिक्षकों को विद्यालय का आहरण वितरण अधिकारी बनाए जाने पर खुशी जताई है। राजकीय शिक्षक संघ टिहरी के जिलाध्यक्ष दिलवर रावत व मंत्री बुद्धि भट्ट ने संघ की मांग माने जाने पर शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत व महानिदेशक उत्तराखंड शिक्षा डॉ. वंशीधर तिवारी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि मांग पूरी होने पर दूरस्थ विद्यालयों के कार्य संचालन में अत्यधिक सुविधा होगी व विद्यालय के शैक्षणिक कार्यों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। बताया कि अब तक प्रभारी प्रधानाचार्य का कार्य देख रहे शिक्षकों को विद्यालयों के कार्य संचालन में अन्य पूर्णकालिक प्रधानाचार्य पर निर्भर रहना पड़ता था, जिसमें अत्यधिक समय व धन की बर्बादी होती थी। (एजेंसी)

जन जागरूकता से बढ़ेगी सामूहिक सहभागिता

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास पैठाणी में वर्षा जल संरक्षण विषय पर गुरुवार को संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस दौरान वक्ताओं ने कहा कि धरती पर लगातार पेयजल किल्लत देखने को मिल रही है, इसके समाधान की दिशा में वर्षा जल संरक्षण एक बड़ा कदम साबित होगा। कहा कि जन जागरूकता से सामूहिक सहभागिता को बढ़ाया जा सकता है। कहा कि चीड़ के जंगलों को बांझ-बुरांस के जंगलों में तब्दील करने से ही भविष्य में पानी की कमी को दूर किया जा सकता है।

महाविद्यालय सभागार में आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन प्राचार्य प्रो. डीएस नेगी ने किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि अनियोजित विकास, बढ़ते कार्बन उत्सर्जन, प्लास्टिक के उपयोग, जंगलों में लगातार लगती आग, वनों के दोहन सहित अनेक कारणों से भू-जल स्तर घटता जा रहा है। जिससे पीने योग्य पानी को लेकर दिन-ब-दिन किल्लत बढ़ती जा रही है। ऐसे में वर्षा जल संरक्षण किया जाना कारगर कदम साबित होगा। कार्यक्रम के सयोजक डॉ. प्रकाश फोंदणी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि हमें वर्षा जल संरक्षण के लिए चाल-खाल आदि का निर्माण करने के साथ-साथ चौड़ी पत्ती वाले पौधों का रोपण करना होगा। जो वर्षा के पानी को लंबे समय तक संचित रखने की क्षमता रखते हैं। साथ ही सूखे चुके जल स्त्रोतों को पुनर्जीवित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्राध्यापक डॉ. सुधीर कोठियाल, डॉ. आलोक कंडारी, डॉ. गौरव जोशी ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर राहुल रावत, अनूप बिष्ट, आशीष कश्यप, पल्लव नैथानी ने विशेष सहयोग प्रदान किया गया।

स्वच्छता अभियान के साथ किया पौधा रोपण

विद्यालय में पौधा रोपण अभियान चलाते विद्यार्थी

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : विश्व पर्यावरण दिवस पर पब्लिक इण्टर कालेज सुरखेत में पौधा रोपण व स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस दौरान विद्यार्थियों ने लगाए गए पौधों के संरक्षण का संकल्प लिया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य पुष्कर नेगी ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के बारे में बताया। कहा कि इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखे के प्रति सहनशीलता थीम के साथ मनाया जा रहा है। वनों की कटाई, वनाग्नि की बढ़ती घटनाओं, वैश्विक तापीयन, प्रदूषण के कारण हवा और जल लगातार खराब होता जा रहा है।

प्राकृतिक आपदाओं और जीव-जन्तुओं की कई प्रजातियों के विलुप्त होने से पारिस्थितिकी तंत्र में असन्तुलन पैदा होने के कारण पर्यावरण पर संकट गहराता जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण के लिए वरदान माने जाने वाले पीपल, बरगद, नीम जैंसे पेड़ों का अधिक से अधिक रोपण करके तथा उन्हें संरक्षित रखकर हम पर्यावरण को सुरक्षित रख सकते हैं। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं ने विद्यालय परिसर में स्वच्छता अभियान चलाकर पेड़-पौधों और फुलवारियों की निराई गुड़ाई करने के साथ ही यूसर्क उद्यान वाटिका में माल्टा के फलदार पौधे रोपित करके उनकी सिंचाई का कार्य किया।

प्राकृतिक आपदाओं के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता

श्रीनगर गढ़वाल : विकासखंड कीर्तिनगर के डागर पट्टी के राड़ागाढ गांव में गुरुवार को ग्रामीणों को भूस्खलन से बचाव की जानकारी दी गई। इस मौके पर लोक निर्माण विभाग के नोडल अधिकारी आनन्द ने कहा कि प्राकृतिक आपदाओं के प्रति मानव को हमेशा सचेत रहने की आवश्यकता है। जो मौसमानुसार दस्तक देती रहती है। ऐसे में भूस्खलन का खतरा और बढ़ जाता है। उन्होंने क्षेत्र निरीक्षण एवं भूस्खलन की जांचों को समय-समय कराने की बात कही। उन्होंने कहा कि बरसात के मौसम में प्राकृतिक एवं दैवीय आपदाओं का खतरा ज्यादा बढ़ जाता है, ऐसे में सभी विभागीय अधिकारियों के साथ-साथ स्थानीय जनता को भी राहत कार्यों में आगे आने की शक्त जरूरत है। जिससे आपदाओं से होने वाले नुकसान को बचाया जा सके।

पौधा रोपण कर संरक्षण का लिया संकल्प

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : ग्राम्य एकता प्रगति प्रेमांजलि समागम समिति की ओर से पौधा रोपण कर उनके संरक्षण का संकल्प लिया गया। इस दौरान सदस्यों ने अन्य लोगों को भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया।

सुबेदार भारत सिंह नेगी की अध्यक्षता में मोटाढांक में पौधा रोप अभियान चलाया गया। जिसमें शिक्षाविद आरके कुकरेती ने आडू के पौधे का रोपण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आज पृथ्वी का तापमान दिनों दिन बढ़ रहा है, जिसका एक कारण अधिक मात्रा में कार्बन उत्सर्जन भी है। आज के औद्योगिकरण के युग में अधिक से अधिक पौधों को लगाना एवम उनका संरक्षण करना अनिवार्य है। मनमोहन कला ने पॉलिथीन पर प्रतिबंध लगाने की आम जनमानस से अपील की। भारत सिंह नेगी ने कहा कि हिमालय क्षेत्र में अधिक आवाजाही से ग्लेशियर को खतरा हो रहा है, जिससे पृथ्वी को नुकसान होगा। अतः सरकार को इस ओर ध्यान देना होगा। इस अवसर पर गेप्स के महामंत्री इंजीनियर जगत सिंह नेगी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि वृक्ष ही असली देव हैं जो हमें ऑक्सीजन देते है। कहा कि इस बार हम अपने पूर्व अध्यक्ष डॉक्टर जय प्रकाश कंडवाल की पावन स्मृति में वाटिका का निर्माण करने जा रहे हैं, जिसके लिए हम उचित स्थान का चयन करेंगे। ताकि उसकी उचित देखभाल एवम संरक्षण हो सके। इस अवसर पर दिनेश चौधरी, नीरजा गौड़, मोहन काला, आरबी कंडवाल आदि मौजूद रहे।

कोटद्वार में पौधा रोपण करते समिति के सदस्य

खैरालिंग कौथिग में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

कल लोक गायक अनिल बिष्ट, लोक गायिका रेनू बाला देंगी लोकगीतों की प्रस्तुति

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : कल्जीखाल ब्लॉक के खैरालिंग कौथिग में पहली जात के दिन ध्वजा चढ़ने से पूर्व ही हजारों श्रद्धालु मंदिर में पहुंचे हैं। तमाम व्यवस्थाओं के बीच मेला निर्विघ्न रूप से शुरू हो गया है। श्रद्धालु इस साल अपेक्षा से अधिक मेला परिसर में पहुंच रहे हैं। पुलिस प्रशासन, राजस्व विभाग व जय खैरालिंग महादेव मंदिर समिति व्यवस्थाओं में जुटी है। बावजूद इसके बड़ी संख्या में वाहन लेकर पहुंच रहे श्रद्धालुओं को मेला परिसर तक पहुंचने में दिक्कतें उठानी पड़ रही हैं। पूरे मनोयोग से श्रद्धालुओं को मंदिर तक पहुंचाने में मंदिर समिति एवं पुलिस प्रशासन जुटा हुआ है। परिसर में श्रद्धालुओं की भीड़ के चलते मंदिर में दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं का तांता लगा हुआ है। गुरूवार को अपराह्न 3:00 बजे खैरालिंग महादेव में तीन गांव की ध्वजाएं चढ़ाई गई। समिति के अध्यक्ष अनिल सिंह नेगी ने तमाम श्रद्धालुओं से अनुरोध किया कि मेले में शांति व्यवस्था बनाने में सहयोग करें। उन्होंने कहा कि इस बार भीड़ अधिक जुटने के बावजूद पुलिस प्रशासन और राजस्व विभाग का अच्छा सहयोग मिल रहा है। जिसके कारण तमाम व्यवस्थाएं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो रही हैं। बताया कि 7 जून को कौथिग के दिन मेला परिसर में भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जायेगें। जिसमें लोक गायक अनिल बिष्ट, लोक गायिका रेनू बाला व गढ़कला सांस्कृतिक संस्था के कलाकार अपनी प्रस्तुति देंगे। दो सत्रों में होने वाले आयोजन में पहले सत्र में उद्घाटन जिला पंचायत अध्यक्ष शांति देवी द्वारा किया जाएगा। जबकि विशिष्ट अतिथि नरेंद्र रावत कुट्टी पूर्व अध्यक्ष डीसीबी, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्रीमती रुचि बुटोला, जिला पंचायत सदस्य संजय डबराल मिंटू होंगे, जबकि समापन सत्र के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक राजकुमार पोरी होंगे। वही विशिष्ठ अतिथि ब्लॉक प्रमुख श्रीमती बीना राणा एवं द्वारीखाल के प्रमुख महेंद्र सिंह राणा संयुक्त रूप से होंगे। मेले में वॉलीबॉल एवं क्रिकेट प्रतियोगिता लोक सैनानी स्वर्गीय नरेंद्र उनियाल मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा आयोजन किया गया। दैनिक जयंत के संपादक नागेंद्र उनियाल ने प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन में सहयोग किया। इस अवसर पर पूर्व जिला पंचायत सदस्य त्रिभुवन उनियाल, क्षेत्र पंचायत एवं खेल संयोजक विवेक नेगी, नरेश असवाल, पुजारी विनोद उनियाल, ग्राम प्रधान कुलदीप मजेड़ा, ग्राम प्रधान रोशन लाल आदि शामिल थे।

शहर की समस्याओं के निराकरण को लेकर डीएम को सौंपा ज्ञापन

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : जन चेतना मंच ने शहर की विभिन्न समस्याएं हल करने की मांग की है। मंच के सदस्यों ने डीएम से मुलाकात कर जल्द ही शहर की समस्याओं का निराकरण करने की मांग की। सदस्यों ने कहा कि पौड़ी शहर में समस्याओं के कारण लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। कहा कि जनहित में जल्द से जल्द समस्याओं का निराकरण किया जाना जरूरी है।

गुरुवार को जन चेतना मंच ने डीएम को ज्ञापन दिया। इस दौरान मंच के दलवीर सिंह नेगी ने कहा कि शहर में आवारा पशुओं व कुत्तों के आतंक से शहरवासी परेशान है। शहर के सार्वजनिक शौचालयों में सफाई नहीं होने से लोगों को समस्याएं हो रही है। उन्होंने डीएम से शहर में स्थित पार्किंगों को खुला रखने, सड़कों व नालियों की समुचित व्यवस्था करने, पेयजल आपूर्ति सुचारू करने की मांग की। इस मौके पर भुवन डोभाल, अजय कुमार, मनमोहन सिंह रावत, संजीव सिंह, हरीश, अनिल, विनोद, मुकेश सिंह रावत, अवतार सिंह, रमेश, गौरव, रोहित, विक्रम गुंसाई, जगमोहन आदि शामिल थे।

एक नजर

गोशाला संचालकों का धरना दूसरे दिन भी जारी

देहरादून। उत्तराखंड में पंजीकृत गोसदन संचालकों का धरना पशु कल्याण निदेशालय मोथरोवाला में दूसरे दिन भी जारी रहा। संचालकों का आरोप है कि उत्तराखंड पशु कल्याण बोर्ड की ओर से गायों की अनदेखी की जा रही है, उनके चारे और भोजन के लिए निर्धारित 40 करोड़ से अधिक की धनराशि को विभाग ने गबन कर लिया है। कहा कि जब से विभाग ने प्रति गोवंश भरण पोषण के लिए 80 रुपये की धनराशि निर्धारित की है, तब से विभाग गोसदन संचालकों के साथ दुर्व्यवहार करने के साथ ही धमकियां भी दे रहा है। संचालकों को आवाज उठाने पर झूठे जांचों में फंसाने की धमकियां भी दी जा रही हैं। पिछले छह महीने से अनुदान की राशि जारी करने में भी लगातार देरी की जा रही है। संचालकों ने चेतावनी दी कि जब तक उनकी मांगें नहीं मानी जाती तब तक धरना जारी रहेगा। धरने पर कमलेश भट्ट, अश्वनी शर्मा, शिव मोहन, अनुपमानंद गिरी महाराज, आशु अरोड़ा, अमित पाल, भूपेंद्र, दीपक, ज्वाला दत्त आदि बैठे रहे।

मेडिकल पीजी छात्र 15 तक जमा करेंगे थिसिस

देहरादून। दून मेडिकल कॉलेज में पीजी छात्र–छात्राएं 15 जून तक अपनी थिसिस जमा करेंगे। प्राचार्य डॉ. आशुतोष सयाना ने गुरुवार को सर्जरी बैच 2021 के पीजी डॉ. रहनुमा, डॉ. शेखर, डॉ. दिव्या, डॉ. पद्मनी, डॉ. स्वाति की थिसिस का अपडेट एवं कार्य प्रगति जानी। उन्होंने पीजी को निर्देशित किया कि वह 15 जून तक अपनी थिसिस जमा कराएं। इस दौरान पीजी के गाइड और को–गाइड डॉ. मोहित गोयल, डॉ. अभय कुमार, डॉ. प्रदीप शर्मा, डॉ. नेहा महाजनडॉ. धनंजय डोभाल आदि मौजूद रहे।

ईपीएस–95 पेंशनर्स राष्ट्रीय संघर्ष समिति ने स्थापना दिवस मनाया

देहरादून। ईपीएस–95 पेंशनर्स राष्ट्रीय संघर्ष समिति ने गुरुवार को देहरादून में स्थापना दिवस मनाया। पेंशनर्स ने न्यूनतम पेंशन तय करने के साथ ही अपनी मांगों को दोहराया।चंद्रबनी स्थित वन विकास वित्त्र डिपो में आयोजित स्थापना दिवस समारोह के मौके पर समिति के सदस्यों ने पौधरोपण कर कार्यत्र्म की शुरूआत की। इस मौके पर वक्ताओं ने न्यूनतम पेंशन समेत अन्य आंदोलन के लिए चल रहे आंदोलन की जानकारी दी और बताया कि उत्तराखंड भी आगामी आंदोलन के कार्यत्र्मों में बढ़–चढ़कर हिस्सेदारी करेगा। इस मौके पर संगठन में सत्रिय सहयोग के लिए प्रदेश अध्यक्ष सुरेश डंगवाल, कार्यकारी अध्यक्ष टीएस बिष्ट, आरपी श्रीवास्तव और कदम सिंह का सम्मान किया गया। कार्यत्र्म में सुभाष शाह, संजीव नारायण डोभाल, मोहित बड़थ्वाल, दिवाकर शाही, भुवन चंद्र, श्याम बाबू, आनंद शर्मा, त्रिलोकी राम, राम बाबू यादव, अवतार सिंह समेत अन्य मौजूद रहे।

ब्लड न मिलने से खफा युवक ने शीशे पर हाथ मार किया खुद को जख्मी

हरिद्वार। बहादराबाद से जिला ब्लड बैंक में आए युवक को एक घंटे इंतजार के बाद भी ब्लड नहीं मिला। इससे गुस्साए युवक ने पहले अपने मोबाइल को पटककर तोड़ दिया। इसके बाद शीशे पर अपना हाथ मार दिया। इससे शीशा टूटने के साथ ही युवक बुरी तरह जख्मी हो गया। घायल युवक को जिला अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती कराया गया।

बहादराबाद निवासी नसीम ने मां का हिमोग्लोबिन लेबल काफी कम होने पर उन्हें बहादराबाद के निजी अस्पताल में भर्ती कराया था। जिला ब्लड बैंक के प्रभारी डॉ. रविंद्र चौहान ने बताया कि सुबह नसीम की मां की हालत को देखते हुए बुधवार तत्काल एक यूनिट खून दे दिया गया था। साथ ही त्रास मैच के लिए मरीज का खून लैब में रख लिया गया।

भाजपा की कनखल में सर्वाधिक मतों से जीत पर स्वागत

हरिद्वार। शहर क्षेत्र में कनखल में सबसे अधिक वोटों से भाजपा के जीतने के बाद गुरुवार को पदाधिकारियों ने खुशी जताई। कनखल में कार्यकर्ताओं ने एक दूसरे को मिठाई खिलाकर बधाई दी। जिलाध्यक्ष संदीप गोयल ने कहा कि यह जीत सभी कार्यकर्ताओं की मेहनत का नतीजा है। बूथ स्तर तक हमारे संगठन ने कार्य किया और जीत पाने में सफल साबित हुए। मंडल अध्यक्ष हीरा बिष्ट ने कहा की सभी कार्यकर्ताओं ने दिन रात बूथ स्तर पर वार्ड स्तर पर संगठन को मजबूत किया सभी के साथ और प्रयास से हमारा मंडल पूरी विधानसभा में सर्वाधिक मतों से विजई रहा।

प्रदेश में 15 जून से पूर्व स्थापित होगी 113 बाढ़ चौकियां : महाराज

सिंचाई मंत्री ने मानसून सीजन की तैयारियों को लेकर की बैठक

जयन्त प्रतिनिधि। हरिद्वार : जनपद के प्रभारी मंत्री और प्रदेश के सिंचाई मंत्री सतपाल महाराज ने सिंचाई विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि मानसून से पूर्व चन्द्राचार्य चौक के आसपास जल भराव से स्थानीय व्यापारियों को होने वाली परेशानी से निपटने के लिए तत्काल कार्य योजना बनाकर नालों की सफाई की जाये। सिंचाई मंत्री ने कहा कि मानसून सीजन को देखते हुए राज्य के 13 जनपदों में कुल 113 बाढ़ चौकियां 15 जून से पूर्व स्थापित कर ली जाएंगी। कहा कि बाढ़ चौकियों के माध्यम से ग्रामीणों को चेतावनी पहुंचाने की व्यवस्था की गयी है। इसके अतिरिक्त सम्बन्धित कर्मचारियों के पास ग्राम प्रधानों एवं जनप्रतिनिधियों के मोबाइल नंबर से आपदा की स्थिति में तत्काल सूचना की व्यवस्था की गई है।सिंचाई मंत्री सतपाल महाराज ने गुरुवार को सीटी कंट्रोल सेंटर (सीसीआर) बिल्डिंग में अधिकारियों के साथ मानसून सीजन की तैयारियों को लेकर बैठक करते हुए कहा कि हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी मानसून अवधि में वर्षा एवं बाढ़ की स्थिति के दृष्टिगत प्रत्येक जनपद के नोडल खण्ड में 15 जून 2024 तक बाढ़ नियंत्रण कक्ष की स्थापना कर जाये। उन्होंने बताया कि राज्य में सिंचाई खण्ड, देहरादून परिसर में केन्द्रीय बाढ़ नियंत्रण कक्ष स्थापित कर दिया गया है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि लक्सर में हडवा नाला और कनखल के लाटेवाली में जल भराव से लोगों के घरों में पानी घुसने से बड़ा नुक्सान होता है। इसलिए समय से इनकी सफाई करना सुनिश्चित किया जाए। सिंचाई मंत्री सतपाल ने कहा कि सिंचाई विभाग के नियंत्रणाधीन जलाशयों के बंधो पर लगातार निगरानी की जाएगी। मानसून में बाढ़ तथा जल भराव की दृष्टि से प्रदेश के 13 जनपदों में 228 संवेदनशील स्थलों का चिन्हीकरण किया गया है। विभाग द्वारा मैदानी जनपदों हेतु विभिन्न शहरों के लिये मास्टर ड्रेनेज प्लान तैयार किया जा रहा हैं, जिसके निर्माण के पश्चात् जल भराव की समस्या का समाधान होगा। बैठक में सिंचाई सचिव राजेश कुमार, जिलाधिकारी धीरज गबर्याल, एमएनए वरुण चौधरी, सिंचाई विभाग के प्रमुख अभियंता जयपाल सिंह, भाजपा जिला अध्यक्ष संदीप गोयल, जिला महामंत्री आशुतोष शर्मा, जयपाल सिंह चौहान, आशु चौधरी सहित अनेक विभागीय अधिकारी मौजूद थे।

पर्यटन मंत्री ने ट्रांजिट कैंप का किया निरीक्षण

पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज ने ऋषिकुल मैदान में स्थित चारधाम यात्रियों के लिए रजिस्ट्रेशन ट्रांजिट कैंप का भी औचक निरिक्षण किया। उन्होंने पर्यटन सचिव को निर्देश दिए कि यात्रियों की लाइन को कम करने के लिए एक परिवार के सभी सदस्यों का पंजीकरण लाइन में खड़ा होना व्यवहारिक नहीं है इसलिए परिवार का कोई भी एक सदस्य लाइन में लग कर सभी सदस्यों का पंजीकरण करवा सके इस तरह की व्यवस्था की जाये।

मंत्री गणेश जोशी ने किया पुरुकुल–किमाड़ी मोटर मार्ग का निरीक्षण

देहरादून। ग्राम्य विकास मंत्री गणेश जोशी ने गुरुवार को पुरुकुल–किमाड़ी मोटर मार्ग का निरीक्षण कर, अधिकारियों से लापरवाही पर जवाब – तलब किया है। उन्होंने अधीक्षण अभियंता को साइट इंचार्ज कनिष्ठ अभियंता से स्पष्टीकरण तलब करने को कहा है।

गुरुवार को निरीक्षण के दौरान गणेश जोशी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 250 तक की आबादी वाली सभी बसावटों को मुख्य सड़क से जोड़ने का लक्ष्य रखा हुआ है। केंद्र सरकार इस काम में उत्तराखंड को पूरा सहयोग कर रही है। इसी त्रम में राज्य को पिछले दो वर्षो में 112 सड़कों के लिए लगभग दो हजार करोड़ की धनराशि उपलब्ध कराई गई है। उन्होंने मौके पर अधिकारियों को कहा कि सड़क कटान के बाद जहां पर भी तारजाल लगाना आवश्यक है, वहां तत्काल सुरक्षात्मक कार्य किए जाएं। उन्होंने कहा कि कटान के बाद खेतों में मिट्टी न डाली जाए, साथ ही जहां–जहां पेयजल लाइन क्षतिग्रस्त हुई हैं, तत्काल दुरुस्त किए जाएं। मंत्री ने बताया कि पुरुकुल किमाड़ी मोटर मार्ग करीब 14 करोड़ की लागत बन रहा है, इसके अलावा इस पर 2.85 करोड़ की लागत से पुल भी बनाया जा रहा है। जोशी ने कहा कि वो सात जुलाई को इस सड़क का फिर से निरीक्षण करेंगे, तब तक सभी कमियों को दूर कर लिया जाए।

इस दौरान ग्रामीणों ने मंत्री से मुलाकात, सड़क पहुंचाने के लिए आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर जिला पंचायत उपाध्यक्ष दीपक पुंडीर, पीएमजीएसवाई के अधीक्षण अभियंता अरुण नेगी, अधिशासी अभियंता हिमांशु श्रीवास्तव के अलावा मदन सिंह, अन्नू पुंडीर, सोबन सिंह, भरत सिंह पुंडीर, ग्राम प्रधान राधेश्याम जुयाल उपस्थित रहे।

गढ़ी कैंट के नवग्रह मंदिर में शनि जयंती पर हुआ हवन

देहरादून। शनि जयंती के अवसर पर गढ़ी स्थित नवग्रह मंदिर में संस्थापक डॉ. सुशांत राज एवं श्रद्धालुओं द्वारा शनि देव की मूर्ति को स्नान कराया गया और हवन का आयोजन किया गया। हवन के उपरांत प्रसाद वितरण किया गया। इस अवसर पर मंदिर में स्थापित नव ग्रह की मूर्तियों का भी श्रृंगार किया गया और मंत्र उच्चारण कर सभी मूर्तियों पर माला अर्पण कर आराधना की गई।

मंदिर परिसर शनिदेव के जयकारों से गूंज उठा। सैकड़ों श्रद्धालुओं ने शनि देव की आराधना कर अपनी और अपने परिवार व देश के लिए सुख शांति की कामना की। कार्यत्र्म में पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व अध्यक्ष अशोक वर्मा, रेडक्रॉस के कोषाध्यक्ष मोहन खत्री, आशीष सक्सेना, बम बहादुर, पीयूष पाण्डे, मधु सूदन, सार्थक राज, अभिषेक, कमला थापा, देवेंदर सिंह, गौरव गोयल, सुशील चौहान, मनोज राठी, सीता शर्मा, विनोद मल्ल, नीरा थापा, पुष्पा छेत्री, मधु कनाल आदि श्रद्धालु उपस्थित थे।

माता वैष्णो देवी गुफा योग मंदिर टपकेश्वर में शनि जन्मोत्सव आचार्य डॉ. बिपिन जोशी के पावन सानिध्य में हर्षोल्लास से मनाया गया। शनि देव का तेल से अभिषेक कर विशेष पूजा अर्चना की गई। विश्व शांति, देश के चहुमुखी विकास और देवभूमि उत्तराखंड की सुख शांति और समृद्धि की मंगल कामना की गई। पूजा अर्चना आचार्य विकास भट्ट ने करवाई। भक्तों को प्रसाद वितरण किया गया। मौके पर डिंपल गायकवाड, पंडित गणेश बिजल्वाण, हर्षपति रयाल, अरविंद बडोनी आदि का विशेष सहयोग रहा।

शनि जयंती पर किया भंडारे का आयोजन

देहरादून(। शनि जयंती के उपलक्ष में भारुवाला ग्रांट बैल रोड स्थित शनि मंदिर में गुरुवार को भंडारे का आयोजन किया गया। कीर्तन मंडली ने कीर्तन किया। भंडारे का आयोजन ऑल इंडियन कांग्रेस कमेटी कार्यकर्ताओं ने किया। मौके पर संगठन के प्रदेश अध्यक्ष पीयूष गौड, कांग्रेस के पूर्व महानगर अध्यक्ष लालचंद शर्मा, पूर्व पार्षद रमेश कुमार मांगू, पूर्व पार्षद मोहन गुरुंग, सुरेंद्र थापा, मनमोहन शर्मा, ललित थापा, डंबर राय, डीएस छेत्री, मन बहादुर राणा, रवि विश्वास राय, आर तमांग, मीना राय, सीमा गौड़, मनोज गुप्ता,आस्था गुप्ता, बबली, शांति देवी उपस्थित रहे।

देहरादून। शनि जयंती पर गढ़ी कैंट पोस्ट ऑफिस एवं कैंटोनमेंट ऑफिस के निकट स्थित नव ग्रह शनि मंदिर में शनि भक्तों ने हवन पूजन किया।

जिला योजना में जनहित के प्रस्ताव करें शामिल : डीएम

डीएम ने जल संस्थान के अधिशासी अभियन्ता का रोका वेतन, अधीक्षण अभियन्ता का मांगा स्पष्टीकरण

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : जिलाधिकारी डॉ. आशीष चौहान ने जिला कार्यालय सभागार में जिला योजना की बैठक लेते हुए जिला स्तरीय अधिकारियों को निर्देश दिये कि वे डीपीसी के सदस्यों से समन्वय स्थापित करते हुए जनहित की योजनाओं के प्रस्ताव को शामिल करें। पौड़ी शहर में पेयजल आपूर्ति की लगातार आती शिकायतों को लेकर जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियन्ता जल संस्थान एसके राय के वेतन रोकने व अधीक्षण अभियन्ता जल संस्थान प्रवीण सैनी के स्पष्टीकरण तलब करने के निर्देश दिये हैं।

गुरुवार को आयोजित जिला योजना प्रारम्भिक तैयारियों की बैठक में जिलाधिकारी ने कहा वित्तीय वर्ष 2024-25 में जनपद का 119.99 करोड़ के परिव्यय में साज-सज्जा वाली व 3 लाख से कम लागत की योजनाओं को शामिल नहीं किया जायेगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि जिला योजना समिति के सदस्यों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए जनहित की ऐसी योजनाओं को जिला योजना में शामिल करें, जिससे लोगों की समस्याएं प्रत्यक्ष रुप से कम हो रही हों। कहा कि इस माह के अंत तक जिला योजना की तैयारियों को लेकर एक और बैठक आहूत की जायेगी, जिसमें योजनाओं के प्रस्तावों की समीक्षा के उपरान्त योजना परिव्यय की स्वीकृति हेतु अग्रिम कार्यवाही की जायेगी। बैठक में डीएओ गढ़वाल स्वपनिल अनिरुद्ध, जिला विकास अधिकारी मनविन्दर कौर, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी राम सलोने, मुख्य शिक्षाधिकारी दिनेश चंद गौड़, मुख्य कृषि अधिकारी अमरेन्द्र चौधरी ईई लोनिवि केएस नेगी सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

डीआईटी विवि में काउंसिलिंग नौ जून को

देहरादून। डीआईटी विश्वविद्यालय में विभिन्न कोर्स में दाखिले के लिए नौ जून को काउंसिलिंग होगी। विवि के वाइस चांसलर डॉ. जी रघुराम ने बताया कि स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यत्र्मों में प्रवेश के इच्छुक छात्र सात जून तक आनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इसमें इंजीनियरिंग, फार्मेसी, वास्तुकला, डिजाइन, लिबरल आर्ट्स, विज्ञान, प्रबंधन, स्वास्थ्य सेवा और नर्सिंग जैसे क्षेत्रों में 70 से अधिक विविध कोर्स हैं। उन्होंने बताया कि विवि में छात्र अब रोबोटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में बीटेक, चिप डिजाइन, इलेक्ट्रिक वाहन, सस्टेनेबल सिटी प्लानिंग, कार्बन न्यूट्रैलिटी, कंप्यूटर विज़न और बायोमेट्रिक्स, रोबोटिक्स, ऑटोमेशन और एआई जैसे विषयों में पढ़ाई कर सकते हैं। इसके अलावा स्वास्थ्य के क्षेत्र में बैचलर ऑफ फिजियोथेरेपी (बीपीटी), मेडिकल लैब टेक्नोलॉजी (बीएमएलटी), ऑप्टोमेट्री (बीऑप्टोम) और ऑपरेशन थिएटर टेक्नोलॉजी के नए विषय भी शुरू किए गए हैं।

बूथ पर अच्छा प्रदर्शन करने वालों को ही मिलेगी अहम जिम्मेदारी : महेंद्र भट्ट

देहरादून। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट ने गुरुवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि भाजपा सरकार और संगठन में अब बूथ पर अच्छा प्रदर्शन करने वालों को ही अहम जिम्मेदारी मिलेगी। पार्टी लोकसभा चुनावों में मिले मतों की बूथवार समीक्षा करेगी और उसके बाद नई नियुक्तियों में बूथ का प्रदर्शन अनिवार्य रूप से देखा जाएगा। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनावों में मिले मतों की बूथवार समीक्षा के लिए कमेटी गठित की जा रही है। यह कमेटी हर सीट की समीक्षा करेगी। इस दौरान सांसद, मंत्री, विधायक, प्रदेश पदाधिकारी, दायित्वधारी और जिला अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष आदि पदाधिकारियों का प्रदर्शन देखा जाएगा। खराब प्रदर्शन करने वाले पदाधिकारियों को चिह्नित कर उनको लेकर आगे निर्णय लिया जाएगा। पत्रकार वार्ता के दौरान भाजपा प्रदेश मीडिया प्रभारी मनवीर चौहान, प्रवक्ता सुरेश जोशी सहित अनेक नेता मौजूद रहे।

हरिद्वार, गढ़वाल में नए प्रत्याशी की वजह से रहा कम अंतर

पत्रकारों ने गढ़वाल और हरिद्वार सीट पर कम अंतर पर सवाल पूछे तो भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि इन दोनों ही सीटों पर पार्टी की ओर से नए प्रत्याशी चुनाव मैदान में उतार गए थे। इसलिए जीत का अंतर कुछ कम रहा है। हालांकि उन्होंने कहा कि दोनों ही न निर्वाचित सांसद पार्टी के वरिष्ठ नेता हैं और पांच सालों के दौरान उनका अपने क्षेत्रों में लोगों से बहुत अच्छा संपर्क हो जाएगा। इससे आने वाले चुनावों में वह दोनों ही सीटों को कई अधिक अंतर से जीतेंगे।

महेंद्र भट्ट ने कहा कि पार्टी समीक्षा के बाद ऐसे सभी बूथ अध्यक्षों को सम्मानित करेगी जहां पर लोकसभा चुनावों में भाजपा को 90 प्रतिशत से अधिक मत मिले हैं। इसके साथ ही ऐसे विधायक भी सम्मानित होंगे जो अपने क्षेत्र में 70 फीसदी से अधिक मत हासिल करने में सफल रहे हैं।

हारी हुई 10 विधानसभा सीटों की समीक्षा होगी

महेंद्र भट्ट ने कहा कि लोकसभा चुनावों में पार्टी राज्य की 10 विधानसभा सीटों पर पीछे रही है। उन्होंने कहा कि इन सीटों की भी अलग से समीक्षा की जाएगी। यहां पार्टी का प्रदर्शन सुधारने के लिए जरूरी कदम उठाए जाएंगे। विदित है कि 2022 के विधानसभा चुनावों में राज्य में भाजपा को 23 सीटों पर हार मिली थी। लेकिन 2024 के लोकसभा चुनावों में पार्टी 10 सीटों पर पीछे रही है।

शहरी विकास मंत्री के आवास को घेरने जा रहे लोगों को पुलिस ने रोका

देहरादून। दून में बस्तियों के नियमितिकरण की मांग को लेकर गुरुवार को शहरी विकास मंत्री के आवास को घेरने जा रहे विभिन्न राजनीतिक और जन संगठनों के लोगों को पुलिस ने यमुना कॉलोनी गेट पर रोका। इससे खफा लोगों ने सरकार के प्रदर्शन कर नारेबाजी की।

मंत्री के पीआरओ को ज्ञापन सौंपकर चेतावनी दी कि यदि जल्द बस्तियों का नियमितिकरण नहीं हुआ तो बड़ा आंदोलन किया जाएगा।सीआईटीयू, एटक, इंटक, एसएफआई से जुड़े लोग जुलूस के रूप में यमुना कॉलोनी पहुंचे। पुलिस ने इससे पहले ही यमुना कॉलोनी का गेट बंद कर दिया था। आत्रोशित लोगों ने सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर नारेबाजी की। कहा कि सरकार कई बार बस्तियों के नियमितिकरण को लेकर आश्वासन दे चुकी है। इसके लिए दो अध्यादेश भी लाया गया, लेकिन अब तक बस्तियां नियमिति नहीं की गई। अब एनजीटी के आदेश का हवाला देकर बस्तियों को उजाड़ा जा रहा है, जिससे बस्ती के लोगों में आत्रोश है। जीवन भर की कमाई लगाने के बाद लोग बेघर हो जा रहे हैं। चेताया कि बस्ती के लोगों का उत्पीड़न बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। प्रदर्शन करने वालों में शंकर गोपाल, लेखराज, राजेंद्र पुरोहित, अनंत आकाश, अनिल कुमार, राम सिंह भंडारी, रविंद्र नौडियाल, विनोद बडोनी, विजय भट्ट, शैलेंद्र परमार, हरीश कुमार, गुरू प्रसाद पेटवाल, रेखा आदि मौजूद रहे।

मैच में जितने छक्के लगेंगे, उससे पांच गुना पौधे रोपेंगे

देहरादून। सचिवालय क्रिकेट क्लब की ओर से शुक्रवार से दून में हॉट वेदर टी–10 क्रिकेट कप शुरू हो जाएगा। क्लब ने इस बार खिलाड़ियों को फिट रखने के साथ पर्यावरण संरक्षण की अनूठी पहल शुरू की है।

इसके तहत टूर्नामेंट में लगने वाले कुल छक्कों से पांच गुना पौधे क्लब हरेला पर रोपेगा।

क्लब के सचिव राजेंद्र रतूड़ी ने गुरुवार को बताया कि प्रतियोगिता 07 से 10 जून तक महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स कॉलेज रायपुर और दून बलूनी क्रिकेट ग्राउंड पर आयोजित की जाएगी। इसे लेकर तैयारियां पूरी कर दी गई हैं। इसमें कुल 14 टीमों में 12 पुरुष और दो महिला टीमें हिस्सा लेंगी।

असुरक्षित पुलों का जीर्णोद्वार प्राथमिकता पर किया जाए : अपर मुख्य सचिव

देहरादून। अपर मुख्य सचिव आनंद वर्द्धन ने प्रदेश में असुरक्षित पुलों का तत्काल जीणोद्वार करने और सड़कों पर क्रेश बैरियर का निर्माण भी तय डेडलाइन के अनुसार पूरा करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने गुरुवार को सचिवालय में विभिन्न विभागों की समीक्षा बैठक लेते हुए,यह निर्देश दिए। अपर मुख्य सचिव ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि प्रदेश के पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों को हवाई सेवा से जोड़ा जाए। अधिकारियों ने बताया कि सभी जिलों में हेलीकॉप्टर सेवा प्रारंभ किए जाने का लक्ष्य रखा गया है। बैठक में लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों ने बताया कि प्रदेश में 94 असुरक्षित पुल चिह्नित किए गए हैं, जिनमें से 34 पुलों का जीर्णाद्धार कर दिया गया है, शेष पर काम किया जा रहा है।

इसी तरह 15 झूला पुलों का इस्टीमेट तैयार कर लिया गया है। लोनिवि अधिकारियों ने बताया कि इस वर्ष सभी चिन्हित स्थानों पर क्रेश बैरियर लगा दिए जाएंगे। शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने बताया कि फर्नीचर के बीते वित्तीय वर्ष में सरकारी स्कूलों में 12 मेगावाट के सोलर प्लांट स्थापित हो चुके हैं, इस वर्ष 2074 स्कूलों में 15.5 मेगावाट के सोलर प्लांट स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है। बैठक में अपर मुख्य सचिव ने कहा कि सरकारी कार्यालयों में ई–आफिस से काम काज में तेजी लाई जाए।

बैठक में भू–अभिलेख व अन्य शासकीय अभिलेखों का डिजिटाईजेशन कार्य दो वर्ष की अवधि में इसे पूरा करने का लक्ष्य रखा गया। बैठक में अधिकारियों ने बताया कि प्रदेश के 13 इम्प्लाइमेंट केन्द्रों को स्वरोजगार केंद्रों के रूप में विकसित किया जा रहा है। पंचायतीराज विभाग के अधिकारियों ने बताया कि इस वर्ष 250 पंचायत भवनों के निर्माण का लक्ष्य रखा है। इस अवसर पर सचिव सुरेंद्र नारायण पांडेय, विनोद कुमार सुमन, अपर सचिव सी रविशंकर, रंजना राजगुरू उपस्थित हुए।

उधमसिंह नगर लोक सभा सीट से नव निर्वाचित सदस्य अजय भट्ट ने की सीएम धामी से शिष्टाचार भेंट

देहरादून। मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी से उत्तराखंड सदन, नई दिल्ली में नैनीताल– उधमसिंह नगर लोक सभा सीट से नव निर्वाचित सदस्य श्री अजय भट्ट ने शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर मुख्यमंत्री ने श्री अजय भट्ट को बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

कूर्मांचल परिषद की महिलाओं ने टपकेश्वर में मनाया वट सावित्री का पर्व

देहरादून। कूर्मांचल सांस्कृतिक एवं कल्याण परिषद गढ़ी शाखा ने वट सावित्री त्यौहार सामूहिक रूप से हर्षोल्लास के साथ टपकेश्वर मंदिर में मनाया। सभी महिलाएं अपने पारंपरिक उत्तराखंडी परिधान पहन कर आई और विधि विधान से वट वृक्ष की पूजा की। वट सावित्री व्रत पूजन में वट वृक्ष के चारों ओर सामूहिक रूप से पूजा कर महिलाओं ने अपने पति के लंबी उम्र की कामना की। टपकेश्वर मंदिर में रोली, चंदन हल्दी, अक्षत, दीप, धूप, सुहाग पिटारी, भीगे चने, विभिन्न प्रकार के फलों के साथ पकवान भी वट वृक्ष को चढ़ाए गए। वृक्ष के चारों ओर मंगल धागा भी बांधा गया और इसके साथ सुहाग अम्बे गौरी हम सबको दीजो सुहाग.. भजन गाया गया। प्रकृति के प्रति अपनी कृतज्ञता त्यौहार के माध्यम से व्यक्त की गई। वट सावित्री व्रत कथा सुनने के बाद गणेश जी, मां अंबे गौरी और शिवजी की आरतियां गाई गई। सभी महिलाओं द्वारा पहाड़ी भजन कीर्तन के साथ झोड़ा चांचरी भी वट वृक्ष के समीप किए गए। टपकेश्वर मंदिर परिसर हर्षोल्लास के साथ महक उठा। गढ़ी शाखा की सचिव बबीता साह लोहनी ने बताया कि हमारी संस्कृति सभी त्यौहार पर्यावरण संरक्षण को आधार बनाकर रखे गए हैं। कार्यत्र्म में कमला उप्रेती, हंसा राणा, कनिका उप्रेती, नीलम शर्मा, प्रेमा तिवारी, रेनू बिष्ट, उमा कांडपाल, नेहा कांडपाल, देवकी रावत, उमा मनराल, जानकी जोशी, नेहा जोशी, ज्योति जोशी, शोभा जोशी, कमला बिष्ट, नेहा रावत, दीपा बिष्ट, लता रावत, दीपा रावत, अनिता बिष्ट, अंजली कांडपाल, पुष्पा भट्ट, इंदु रावत, तनुजा तिवारी, सीमा पांडेय, पुष्पलता जोशी, सीमा जोशी, सरस्वती पांडे आदि सामूहिक रूप से शामिल रहे।

व्यापारियों ने छबील लगा बांटा शरबत

हरिद्वार। कृष्णा नगर के उदासीन मार्केट के व्यापारियों ने दुकानों के आगे छबील लगाकर राहगीरों को ठंडा शरबत बांटा। इस अवसर पर व्यापारियों ने बताया कि गर्मी के चलते राहगीरों को परेशानी होती है।

उन्हें राहत देने के लिए छबील लगाई गई है। इस दौरान विक्की बहल, महेंद्र तनेजा,महिमा, हृदया आदि मौजूद रहे।

उत्तराखंड प्रीमियर लीग अब सितंबर में होगी

देहरादून। क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ उत्तराखंड की ओर से जून में प्रस्तावित उत्तराखंड प्रीमियर लीग(यूपीएल) अब सितंबर में होंगे। मानसून के चलते एसोसिएशन ने तिथि आगे बढ़ा दी है। यूपीएल के दूसरे संस्करण को भव्य रूप देने के लिए पूर्व में सीएयू की ओर से एसएस पार्क कंपनी से करार भी किया गया था।

आईपीएल की तर्ज पर इस बार लीग में फ्रेंचाइजी के माध्यम से खिलाड़ियों का चयन होना है। सीएयू के सचिव महिम वर्मा ने बताया कि बरसात के चलते लीग में व्यवधान पैदा न हो, इसके लिए प्रतियोगिता की तिथि आगे बढ़ा दी है। उन्होंने बताया कि फिलहाल सितंबर में लीग कराने का निर्णय लिया गया है, अभी तिथि तय नहीं हैं। बता दें यूपीएल में छह टीमों ने हिस्सा लेंगी।

महिला आयोग ने लिया लालतप्पड़ में महिला की हत्या का संज्ञान

देहरादून। उत्तराखंड राज्य महिला आयोग ने लालतप्पड़ चौकी क्षेत्र में बुधवार देर रात महिला का गला दबाकर हत्या के मामले का संज्ञान लेते हुए एसओ डोईवाला से आरोपियों को गिरफ्तार कर कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। महिला आयोग अध्यक्ष कुसुम कंडवाल ने एसओ डोईवाला से फोन पर वार्ता की। एसओ डोईवाला ने बताया कि पुलिस ने एक नामजद व दो अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। एक आरोपी मृतका के बेटे की वर्कशॉप में काम करता था। लालतप्पड़ निवासी कुलदीप कौर(54) पत्नी हरजीत सिंह आंगन में सो रही थी। इसी दौरान तीन लोग आंगन में आ धमके। दो व्यक्तियों ने कुलदीप कौर के पैर दबाए और एक गला दबाने लगा। इसी दौरान उसके बगल में सो रही नातिन बेटी की पुत्री सिमरन जाग गई। वह अपने मामा जगदेव (कुलदीप कौर के पुत्र) को बुलाने के लिए कमरे की ओर दौड़ पड़ी लेकिन जब तक कोई पहुंचता तीनों भाग निकले। भागते आरोपियों पर जगदेव के चाचा हरजिंदर सिंह की भी नजर पड़ी। घटना के बाद परिजन कुलदीप कौर को जौलीग्रांट अस्पताल लेकर गए जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। मामले में आयोग अध्यक्ष ने एसओ डोईवाला को शीघ्रता दिखाते हुए तत्काल आरोपियों को ढूंढ कर उनके विरुद्ध कड़ी धाराओं में कार्रवाई के लिए निर्देशित किया है। उन्होंने कहा कि महिला के घर में घुस कर उसकी हत्या करने वाले अत्यंत गम्भीर अपराधी है। ऐसे आरोपियों के हौसले बुलंद ना हो इसके लिए जल्द से जल्द उन्हें गिरफ्तार किया जाना चाहिए।

जयन्त
संस्थापक
स्व.नरेन्द्र उनियाल
प्रकाशक,मुद्रक और स्वामी
नागेन्द्र उनियाल द्वारा प्रतिभा प्रेस से मुद्रित तथा बद्रीनाथ मार्ग कोटद्वार (गढ़वाल) से प्रकाशित
–सम्पादक
नागेन्द्र उनियाल
आर.एन.आई. 35469/79
फोन/फैक्स 01382–222383
मो. 8445596074, 9412081969
e-mail:
nagendra.uniyal@gmail.com